(एकांकी संचयन)

जगदीश प्रसाद मण्डल

ISBN : ९७८-९३-८०५३८-४१-९

मूल्य : भा. रू. १५०/-
पहिल संस्करण : २०१३

गाम-पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी
मिथिला, बिहार
पिन- 847410

श्रुति प्रकाशन
रजिस्टर्ड ऑफिस : ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली- ११०००८. दूरभाष-(०११) २५८८९६५६-५८
फैक्स- (०११) २५८८९६५७

Website : http://www.shruti-publication.com
e-mail : shruti.publication@shruti-publication.com
Printed at : Ajay Arts, Delhi- ११०००२

Typeset by : Sh. Umesh Mandal.

Distributor :
Pallavi Distributors, Ward no- ६, Nirmali (Supaul), मो.-
९५७२४५०४०५,
९९३१६५४७४२

Panchbati, Ekanki sanchayan : A collection of one-Act Plays
by
Sh. Jagdish Prasad Mandal.

परिचए-पात : जगदीश प्रसाद मण्डल

जन्म : ५ जुलाइ १९४७ ई.मे

पिताक नाओं : स्व. दल्लू मण्डल।

माताक नाओं : स्व. मकोबती देवी।

पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।

पुत्र : सुरेश मण्डल, उमेश मण्डल, मिथिलेश मण्डल।

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा।

मूलगाम : बेरमा, भाया- तमुरिया, जिला-मधुबनी, (बिहार) पिन- ८४७४१०

मोबाइल : ०९९३१६५४७४२, ०९५७०९३८६११, ०९९३१७०६५३१

ई-पत्र : jpmandal.berma@gmail.com

शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी आ राजनीति शास्त्र) मार्क्सवादक गहन अध्ययन। हिनकर साहित्यमे मनुखक जिजीविषाक वर्णन आ नव दृष्टिकोण दृष्टिगोचर होइत अछि।

जीविकोपार्जन- कृषि।

सम्मान : गामक जिनगी लघुकथा संग्रह लेल विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११क मूल पुरस्कार आ टैगोर साहित्य सम्मान २०११; तथा समग्र योगदान लेल वैदेही सम्मान- २०१२; एवं बाल-प्रेरक विहनि कथा संग्रह ''तरेगन'' लेल ''बाल साहित्य विदेह सम्मान'' २०१२ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कार रूपेँ प्रसिद्ध) प्राप्त।

साहित्यिक कृति :

उपन्यास : (१) मौलाइल गाछक फूल (२००९), (२) उत्थान-पतन (२००९), (३) जिनगीक जीत (२००९), (४) जीवन-मरण (पहिल संस्करण २०१० आ दोसर २०१३), (५) जीवन संघर्ष (पहिल संस्करण २०१० आ दोसर २०१३), (६) नै धाड़ैए (२०१३) प्रकाशित। (७) सधबा-विधवा, (८) बड़की बहिन तथा (९) भादवक आठ अन्हार शीघ्र प्रकाश्य।

नाटक : (१) मिथिलाक बेटी (२००९), (२) कम्प्रोमाइज (२०१३), (३) झमेलिया बिआह (२०१३), (४) रत्नाकर डकैत (२०१३), (५) स्वयंवर (२०१३) प्रकाशित।

लघु कथा संग्रह : (१) गामक जिनगी (२००९), (२) अर्द्धांगिनी (२०१३), (३) सतभैंया पोखरि (२०१३), (४) उलबा चाउर (२०१३), (५) भकमोड़ (२०१३)

विहनि कथा संग्रह : (१) बजन्ता-बुझन्ता (२०१३), (२) तरेगन (बाल-प्रेरक विहनि कथा संग्रह) (२०१० पहिल संस्करण, २०१३ दोसर संस्करण)

एकांकी संग्रह : (१) पंचवटी (२०१३)

दीर्घ कथा संग्रह : (१) शंभुदास (२०१३)

कविता संग्रह : (१) इंद्रधनुषी अकास (२०१३), (२) राति-दिन (२०१३), (३) सतबेध (२०१३)

गीत संग्रह : (१) गीतांजलि (२०१३), (२) तीन जेठ एगारहम माघ (२०१३), (३) सरिता (२०१३), (४) सुखाएल पोखरिक जाइठ (२०१३)

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक ढेरपर बैसल

फुलवाड़ी लगौनिहारकेँ

एवं

नव विहान अननिहारकेँ

समरपित...

१

सतमाए

पात्र परिचए- सतमाए

पुरुष पात्र-

बुद्धिधारी-	स्कूलक प्रधानाध्यापक। उमेर- ४० बर्ख।
विपतिबाबू-	सहायक शिक्षक। उमेर- ४० बर्ख।
पुलकित-	स्कूलक चपरासी। उमेर- ४० बर्ख।
चिन्तामणि-	विपतिबाबूक भावी ससुर। उमेर ६० बर्ख।
शिवकुमार-	विपतिबाबू बेटा। उमेर १८ बर्ख।

नारी पात्र-

सुलक्षणी-	विपतिबाबूक माए। उमेर ६० बर्ख।
सावित्री-	चिन्तामणिक पत्नी। उमेर- ५८ बर्ख।
खजुरिया-	ग्रामीण स्त्री। उमेर- २५ बर्ख।
तेतरी-	खजुरियाक बहिनपा। उमेर- २५ बर्ख।

पहिल दृश्य-

विद्यालय। समए माघक ३ बजे। स्कूलक आँगनमे बुद्धिधारीबाबू (प्रधानाचार्य) विपतिबाबू (सहयोगी शिक्षक) कुरसीपर आ पुलकित (चपरासी) स्टूलपर बगलमे बैस गप-सप्प करैत।

बुद्धिधारी- आब विद्यालयमे नै मोन लगैए। होइए जे कखन रिटायर भऽ जाइ। कखनो कऽ तँ एहनो भऽ जाइए जे भोलेन्ट्री रिटायरमेंट लऽ ली।

पुलकित- से किए मास्सैब?

बुद्धिधारी- तोहूँ तँ पनरह-बीस बर्खसँ संगे रहिते छह देखिते छहक जे की मान-प्रतिष्ठा स्कूलो आ शिक्षकोक छल आ अखनि की अछि।

पुलकित- ऐ जुगमे मान-प्रतिष्ठा लऽ कऽ धो-धो चाटब। भने दिन-राति दरमाहा बढ़बे करैए, सुखसँ जीबू।

बुद्धिधारी- *(कनडेरिए आँखिए पुलकित दिस देखि)* तूँ जे सवाल उठेलह पुलकित, ओ बड़-भारी अछि। मुदा प्रश्न तोहर छिअ तँए जवाब देब उचित भऽ गेल।

(जिज्ञासासँ विपतिबाबू बुद्धिधारीबाबूक नजरिपर आँखि गाड़ि मोनकेँ असथिर कऽ सुनैक बाट तकै छथि।)

पुलकित- मास्सैब, जहिना खेतक आड़ि-धूड़ बाढ़िक बेगमे बिगड़ि जाइत तहिना भऽ गेल अछि।

(पुलकितक दोहरौल प्रश्नसँ बुद्धिधारीबाबूक मोन आरो अमता गेलनि। मुदा धैर्यसँ शक्ति जगबैत)

बुद्धिधारी- पुलकित, जेते सुख आ चैनसँ जीबए चाहैत छी ओते दुख आ बेचैनी बढ़ल जाइए। तोंही कहऽ जे बिना काजक बोइन जे भेटतह ओ अन्न देहमे लगतह।

पुलकित- *(औगता कऽ)* से केना लगत। काजमे जेते देह दुहाइत अछि ओते भूख जगै छै जेते भूख जगै छै ओते अधिक अन्न पचै छै। देह थकबे ने करत तँ भूख केना जागत। जँ भूख नै जागत तँ खाइक क्षुधा केना हएत? जेहेन खाइ अन्न तेहेन बने मोन, जेहेन बने मोन, जेते जगे अर्पण।

बुद्धिधारी- अपने विद्यालयक खिस्सा कहै छिअह। जइ दिनमे एलौं ओइ दिनमे एगारह गोटे शिक्षक रही आ चारू किलास

मिला कऽ साढ़े चारि सए विद्यार्थी रहए। साइंस, कौमर्स आ आर्ट तीनू फेक्लटी रहए।

पुलकित- चपरासी केतेक रहए?

बुद्धिधारी- *(मुस्की दैत)* एक्केटा। काजो कम रहए। अच्छा सुनह। सभ किलासमे सेक्शन चलैत रहए। अखनि देखहक जे रजिष्टरमे छह सए विद्यार्थी आ सतरह गोटे शिक्षक छी।

पुलकित- हँ, से तँ छी।

बुद्धिधारी- मुदा की देखै छहक जे आइ मात्र चर्तुदशी छी, ने शिक्षक एला आ ने छात्र।

पुलकित- छुट्टीक दरखास आएल की नै?

बुद्धिधारी- एक्कोटा नै।

पुलकित- मास्सैब, ऐ बुढ़ाड़ीमे केते माथा-पच्ची करब। भरमे-सरम अपन जिनगी आ परिवारकेँ देखियौ।

बुद्धिधारी- से उचित हएत?

पुलकित- रूइया जकाँ जे माथ धुनि-धुनि उड़ेबे करब तइसँ सीरक केना बनत?

(विपतिबाबूपर नजरि दैत)

बुद्धिधारी- एते दिन तँ नै कहलौं विपतिबाबू किएक तँ साल नै लगल छल मुदा आब तँ सालसँ ऊपर भऽ गेल। एकटा बात पुछू?

विपतिबाबू- एकटा किए हजारटा पूछि सकै छी। जखनि सभ दिन एकठाम रहै छी, एक पेशा अछि, तखनि पुछैले आदेशक की प्रयोजन?

बुद्धिधारी- अहाँ बिआह कऽ लिअ?

विपतिबाबू- यएह जे दूटा बेटो-बेटी अछि।

बुद्धिधारी- मानै छी। मुदा ई कहू जे बेटा-बेटीक उमर केते अछि?

विपतिबाबू- अपने विद्यालयमे बेटा एगारहममे पढ़ैए आ बेटी नाइन्थमे।

बुद्धिधारी- *(आंगुरपर हिसाब जोड़ि)* चौदह-पनरह बर्खक बेटा आ बारह-तेहर बर्खक बेटी हएत?

विपतिबाबू- करीब-करीब।

बुद्धिधारी- पान-सात बर्खमे बेटी सासुर चलि जाएत। जे हवा बनि रहल अछि ओइमे जँ बेटाकेँ इंजीनियर वा एम.बी.ए. नै कराएब सेहो नै बनत।

विपतिबाबू- जँ से नै कराएब तँ हँसारते हएत। तैपरसँ ईहो दोख लागत जे माए मरिते बेटा-बेटीकेँ विपति कुभेला करै छै।

बुद्धिधारी- *(किछु सोचैत)* कहलौं तँ ठीके। मुदा जँ अपना काजमे कमी नै आनब तँ लोक बाजत किए। कहुना तँ पच्चीस-तीस हजार महिना उठबिते छी। असानीसँ सभ काज चला सकै छी।

विपतिबाबू- *(मुड़ी डोलबैत)* एक तरहक विचार अछि।

बुद्धिधारी- *(नम्हर साँस छोड़ैत)* ई भार हमरा ऊपर रहल। जहिना एक-एक समस्या डोरीक सूत जकाँ बाँटल अछि तहिना ओकरा खोलि कऽ उघारि-उघारि सोझराबए पड़त।

पुलकित- *(फरकि कऽ)* मास्सैब, कँटहो बाँस तँ लोके काटि कऽ घरमे लगबैए आ ई कोन ओझरी छिऐ।

बुद्धिधारी- एक आदमीक समस्या (ओझरी) केतेकोकेँ ओझरबैए। तँए औगता कऽ किछु बाजि देब वा करैले डेग उठा देब, अनुचित हएत। *(घड़ी देखि कऽ)* सवा तीन बजिए गेल। काजो नहियेँ जकाँ अछि। चाभी लऽ कऽ क्लासोक कोठरी आ ऑफिसो बन्न कऽ दहक।

(पुलकित चाभी लेल बढ़ए लगल। दुनू गोटे कुरसीपर सँ उठि गेला। दुनू कुरसीओ आ स्टूलो ऑफिसमे रखि कोठरी बन्न कऽ पुलकित अबैए।)

बुद्धिधारी- विपतिबाबू, अहाँक जिनगी *देखि* मोनमे उदिग्नता उठि रहल अछि।

विपतिबाबू- किए?

बुद्धिधारी- अपना सभ समाजक उच्च श्रेणीक रहितो जिनगी आ मनुखक रहस्य नै बूझि रहल छी। जे सहजे निम्न श्रेणीक (बौद्धिक) छथि ओ केना बूझत। जँ से नै बूझत तँ अमती काँट जकाँ ओझरी (जिनगीक) केना छोड़ा पौत?

विपतिबाबू- *(मुड़ी डोलबैत)* बड़ गंभीर बात कहलौं।

बुद्धिधारी- सदैत इच्छा रहैए जे सबहक परिवार नीक जकाँ फड़ै-फुलाइ मुदा से कहाँ भऽ पबैए। जहिना आगू बढ़ल चिन्ता ग्रस्त (दुखी) तहिना पछुआएल। आखिर एना होइ किए छै?

पुलकित- मास्सैब, अनेरे मोन भरिओने छी। हँसि-खेल जिनगी गुदस कऽ ली सभसँ नीक।

(पुलकितक बात बुद्धिधारीक करेजकेँ आरो बेध देलकनि। मुदा कोढ़मे चोट लगने असीम दरदो होइत तँ मुहसँ हँसीओ फुटैत।)

बुद्धिधारी- *(मुस्की दैत)* पुलकित, औझका दरमाहा तँ फोकटेमे भेल किने?

पुलकित- फोकटमे केना भेल। भरि दिन बरदाएल जे रहलौं।

बुद्धिधारी- अच्छा चलह संगे, तोरे ऐठाम चाह पीब।

पुलकित- दुआर पर तँ नहियेँ पीआएब दोकानमे जरूर पीआ देब।

बुद्धिधारी- से किए?

पुलकित- घरवाली व्रत केने छथि। ओ तँ अनेरे पेटकान लधने हेती। तैपर चाह बनबए कहबनि। बाढ़नि सूप छोड़ि आरो किछु भेटत।

बुद्धिधारी- तखनि तँ तोहर घरवाली बड़ धर्मात्मा छथुन?

पुलकित- सोलहन्नी। बिना धरमत्मे भरि दिन खटै छी आ दरमाहा हुनका हाथ पड़ै छन्हि।

बुद्धिधारी- धर्मो केते रंगक होइए?

पुलकित- मास्सैब, अहीं मुहेँ ने सुनने छी, जेते रंगक लोक तेते रंगक धरम। कियो कोदारि पाड़ि पसिना चुबा धरम-करम (धर्म-कर्म) बुझैए, तँ कियो बम-गोली लऽ धर्म-कर्म बुझैए। कर्म तँ दुनू करैए।

❍ ❍

दोसर दृश्य-

(विपतिबाबूक दरबज्जा। सुलक्षणी माए आ शिव कुमार (विपतिबाबूक बेटा) दरबज्जापर बैसल।"
(बुद्धिधारी, विपतिबाबू आ पुलकितक प्रवेश। सुलक्षणीकेँ गोड़ लगैत बुद्धिधारी। उठि कऽ ठाढ़ होइत सुलक्षणी कुरसीकेँ आँचरसँ झाड़ैत।)

सुलक्षणी- ऐपर बैसू। (बुद्धिधारीकेँ बैसते) बाल-बच्चा सभ आनन्दसँ छथि किने?

बुद्धिधारी- भगवानक कृपासँ सभ आनन्दित अछि।

सुलक्षणी- भगवान नीक करथि। अहिना सभ दिन परिवार फुलाइत-फड़ैत रहए।

बुद्धिधारी- एकटा विचार लेल एलौं?

सुलक्षणी- हम कोन जोकरक छी जे अहाँकेँ विचार देब। तखनि तँ जे बुझै छी सएह ने कहब।

बुद्धिधारी- विपतिबाबूकेँ बड़ कष्ट होइ छन्हि। तँए विचार भेल जे ओ दोसर बिआह कऽ लथि।

सुलक्षणी- *(कनीकाल चुप रहि)* जहिना बेटा विपति अछि तहिना अहूँकेँ बुझै छी बौआ। तँए बजैमे धड़ी-धोखा नै होइए। हमर आशा केते दिन? वृद्ध भेलौं, कखन छी कखन नै, तेकर कोनो ठेकान नै अछि।

बुद्धिधारी- तँए ने विचार करबाक अछि।

सुलक्षणी- दुनियाँमे ने सभ मनुख एक रंग अछि आ ने एक रंग चालि-ढालि छै। निको छै अधलो छै।
(कहि चुप भऽ जाइत)

बुद्धिधारी- अहाँक विचार की अछि?

सुलक्षणी- के अपन परिवारकेँ उजड़ैत-उपटैत देखए चाहत।

बुद्धिधारी- अपन जे अखनि परिवार अछि, ओ केना लहलहाइत रहत अइले ने विचारैक जरूरति अछि?

सुलक्षणी- विपति हमर बेटा छी आ शिवकुमार पोता छी। दुनू केना नीक-नहाँति जिनगी बितौत सएह ने मोनमे अछि। पोती तँ पाँच बर्ख पछाति सासुर जाएत।

बुद्धिधारी- *(मुड़ी डोलबैत)* हँ, कहलौं तँ नीके, मुदा...?

सुलक्षणी- मुदा की?

बुद्धिधारी- मुदा यएह जे जहिना पोखरिमे करहर-सौरखीक जनमौटी गाछक पात पकड़ि ओरिया कऽ गाछ पकड़ि जड़िमे (निच्चाँमे) पहुँच उखाड़ल जाइत अछि तहिना केलासँ परिवारक कल्याण हएत।

सुलक्षणी- बौआ, अहाँक बात नै बुझलौं?

बुद्धिधारी- परिवारमे जेते गोरे छी सबहक जिनगीक डोरि पकड़ि-पकड़ि ठौर धरबए पड़त। तखने जा कऽ सुढ़ियाएत।

सुलक्षणी- *(मुड़ी डोलबैत)* कहलौं तँ ठीके मुदा समाजो तँ तेहेन अछि जे नीक-अधला बात बाजि मोनकेँ घोर कऽ दैत अछि। जइसँ लोकक विचारमे धक्का लगै छै। *(कहि चुप भऽ जाइत)*

(बिच्चेमे पुलकित)

पुलकित- मास्सैब आ चाची, दुनू गोरेकेँ कहै छी। विपति भाय एकबतरिए हेता। हमर जे घरवाली मरल रहैत तँ केकरोसँ पुछबो ने कैरतिऐ आ दोहरा कऽ बिआह कऽ नेने रहितौं।

(पुलकितक बात सुनि)

बुद्धिधारी- *(हँसैत)* पुलकित, परिवारक संग समाजोक विचार करए पड़ै छै।

पुलकित- समाजकेँ अपने ठेकान नै छै। निकोकेँ अधला कहैए आ अधलोकेँ नीक।

बुद्धिधारी- हँ, से तँ अछि।

पुलकित- (अपना विचारपर जोर दैत) मास्सैब, जे समाज केकरो घर नै बना सकैए ओकरा कोन अधिकार छै जे केकरो घर उजाड़ै।

बुद्धिधारी- कहलह तँ ठीके मुदा औगताइमे किछु करबो तँ सभ नीके नै होइत अछि। अधलो भऽ सकैए।

पुलकित- हँ, से तँ होइतो अछि।

बुद्धिधारी- तँए ने विचारक जरूरति अछि। तूँ तँ विपतिबाबूक परेशानी देखि धाँइ दऽ बजलह। तोहर विचार कटैबला नै छह।

पुलकित- एकबेर आरो चाह पीबू तखनि मोन आरो खनहन हएत। जइसँ झब दऽ रस्ता भेटत।

(पुलकितक बात सुनि)

विपतिबाबू- बौआ (शिवकुमार) चाह बनौने आबह। पुलकितक कपमे कनी बेसी कऽ चीनी देने अबिहऽ।

पुलकित- हम की आन दुआरे चाह पीबै छी मीठे दुआरे पीबै छी की। जावतो जीबै छी तावतो जँ हँसी-खुशीसँ नै जीयब तँ अनेरे जीबिए कऽ की करब।

(चाह अबैए सभसँ पहिने पुलकितेक कप बढ़बैए।)

बुद्धिधारी- हमरो कपक चाह कनी पुलकितमे ढारि दहक।

पुलकित- एँह, मास्सैब केहेन गप बजै छी। अनकर हिस्सा खाएब से पचत।

बुद्धिधारी- *(हँसैत)* हमरा आन बुझै छह?

पुलकित- नै मास्सैब, मुहसँ निकलि गेल। अच्छा कनी ढारि दियौ।

(चाह पीब पान खा)

बुद्धिधारी- चाची, विपतिबाबू जँ दोसर बिआह करथि तँ अहाँकेँ कोनो विरोध नै ने?

सुलक्षणी- नै। आब हमरा की चाही। वस एतबे ने जे पाँच कर भोजन आ पाँच हाथ वस्त्र भेटैत रहए।

बुद्धिधारी- बाउ, शिवकुमार, अहाँ मोनमे की बनैक (पढ़ैक) विचार अछि?

शिवकुमार- अखनि तँ हाइए स्कूलमे छी। मुदा मोनमे अछि जे चाहे इंजीनियरिंग वा एम.बी.ए. पढ़ी।

बुद्धिधारी- बहुत बढ़ियाँ। मुदा जखनि इंजीनियर वा एम.बी.ए. करबह तखनि तँ नोकरी करए कारखाना वा शहर-बजार जेबह। परिवारो (पत्नी) जेथुन।

(शिवकुमार गुम भऽ जाइत अछि)

बुद्धिधारी- चुप किए भेलह। बाजह।

शिवकुमार- हँ।

बुद्धिधारी- बात तोंही कहऽ जे दादी मरि जेथुन, तों परिवारक संग शहर चलि जेबह, बहिन सासुर चलि जेतह, ऐठाम विपतिबाबूक दशा की हेतनि?

शिवकुमार- मास्सैब, अहाँ बाबूक संगीए टा नै छियनि, गुरुओ छी। अपने जे कहब शिरोधार्य अछि।

बुद्धिधारी- विपतिबाबू, दुनियाँमे मनुख खराब नै होइत अछि। ओकरा बनबैमे नीक-अधला होइ छै। जइसँ नीक-अधला बनैए।

पुलकित- हँ, से तँ होइ छै।

बुद्धिधारी- माए लेल बेटा-बेटी, बेटा-बेटी लेल पिता आ पत्नी (बिआह पछाति) लेल पति बनि आगूक जिनगी बना

जीब। यएह अंतिम बात अछि। पुलकित एकटा कनियाँ ताकह।

❍ ❍

तेसर दृश्य-

(तेतरी आ खजुरिया विपरीत दिशासँ अबैत बाटपर भेँट।)

खजुरिया- फुल केतए दौगल जाइ छी। पएरपर पएर नै पड़ैए?

तेतरी- की कहब फुल, देखियौ जे सुरूज सिरपर आबि गेल, अखनि तक भानस नै चढ़ैलौं। अपने (पति) नहाइले गेल हेता भानस चढ़ेबे ने केलौं।

खजुरिया- किए ने अखनि तक भानस चढ़ेलौंहेँ?

तेतरी- की पुछै छी फुल, *(मुस्की दैत)* रजकुमराकेँ देखियौ जे पहिलुका *(विआही)* बहु छोड़ि कऽ अबलट लगाकेँ चलि गेल छेलै जे ऐहेन पुरुखसँ खनदान नै बढ़त। जखनि ओ (रजकुमरा) चुमौन कऽ लेलक तखनि फेर घुरि कऽ अपने फुरने चलि आएल।

खजुरिया- चलि एलै तँ रखि लिअ। जहिना अबलट लगा पड़ाएल जे ऐ पुरुखसँ खनदान नै बढ़तै तहिना कमाएत-खाएत अपन रहत। जखनि रहैक मोन हेतै रहत जाइक मोन हेतै जाएत। तइले एते मत्था-पच्ची करबाक कोन जरूरति छै?

तेतरी- जेहने खेलाड़ि मौगी छै तेहने रजकुमरा अपने अछि। हँसि-हँसि बजैत रहैए तँए बुझै छिऐ। नमरी अछि, नमरी।

खजुरिया- ओइ पाछू अहाँक भानसक अबेर किए भऽ गेल। झगड़ा केकरो आ काज छुटि गेल अहाँकेँ?

तेतरी- नून आनए दोकान विदा भेलौं आकि हल्ला सुनलिऐ, भेल जे केकरो किछु भऽ गेलै। ससरि कऽ गेलौं तँ यएह रमा-कठोला देखलिऐ। ओही लटारममे लागि गेलौं।

खजुरिया- फेर भेलै की?

तेतरी- की हेतै। मोन दुनूक लसिआएल बूझि पड़ल। मुदा हारल तँ दुनू अछि। लाजे लोक लगमे की बाजत तँए दुनू अनकर मोन पतिअबै छै। अखनि जाए दिअ फुल। निचेनमे सभ गप कहब।

खजुरिया- भानस हेबे करतै मुदा आधा गप कहि कऽ छोड़ि देलिऐ। अखनिसँ पेटमे उनटैत-पुनटैत रहत। अनका पुरुख जकाँ की हिनकर पुरुख छन्हि जे मुँह अलगौतनि?

तेतरी-	मुँह जे अलगौत से कोन सपेतकऽ। कमा कऽ हाथमे आनि दइ छथि मुदा नूनसँ हरैद धरि तँ हमरे जोरह पड़ैए। भरि दिन दौगैत-दौगैत तबाह रहै छी।
खजुरिया-	एकटा गप सुनलिऐ हेन?
तेतरी-	की? नै!
खजुरिया-	गाममे नै छेलखिन?
तेतरी-	गाममे की कोनो एक्केटा गप चलैए जे सभ एक्के गप सुनत? रंग-बिरंगक गप पुरवा-पछवा जकाँ सदिखन चैलते रहैए की?
खजुरिया-	अखनि ईहो अगुताएल छथि आ हमरो काज सभ अछि। कखनो निचेनमे दुनू फुल गप कऽ लेब।
तेतरी-	तोहुँ हद करै छह। आ जे बिसरि जा?
खजुरिया-	एहनो गप विसरल जाइए।
तेतरी-	हँ, तँ विसरल जाइए कि? आ जे अहूसँ निम्मन गप आबि जाए तँ हल्लुक गप लोक बिसरिए जाइए किने?
खजुरिया-	हँ, बेस कहलथि। मुदा खरिआइर कऽ नै कहबनि। ऊपरे-झापरे कहि दइ छियनि।
तेतरी-	हँ, सएह कहऽ।
खजुरिया-	पढ़ि-लिखि कऽ तँ आरो लोक गाम घिनबैए।
तेतरी-	से की?
खजुरिया-	एँह, की कहबनि?
तेतरी-	नै-नै, कनी फरिया कऽ कहू।
खजुरिया-	विपति मास्टर दोसर बिआह करता?
तेतरी-	तँ ई कोन बड़-भारी बात भेल। वेचाराक स्त्री मरि गेलनि भानस-भातमे दिक्कत होइत हेतनि।
खजुरिया-	एँह, अहिना बुझै छथिन।
तेतरी-	से की?
खजुरिया-	आइ जँ बेटा-बेटी नै रहितनि तखनि जँ करितथि तँ एकटा सोहनगर होइतै। जखनि बेटा-बेटी ढेरबा-जवान भेल तखनि किए करै छथि।
तेतरी-	*(मुँह बन्न केने)* हूँ।
खजुरिया-	हमरा काकाकेँ देखलखिन। वेचारेकेँ तँ एक्केटा बेटी भेलनि आ काकी मरि गेलनि। केतबो लोक हिला-डोला कऽ रहि गेल तैयो मानलखिन।
तेतरी-	हँ, से तँ बेस कहलौं।
	(कनी काल चुप रहि) हूँ...।

खजुरिया- भानसो भातक दिक्कत की होइ छन्हि। अखनि हाथी सन माएओ छेबे करनि, बेटीओ भानस करै जोकर भइए गेलनि तखनि किए करै छथि। पुरुखक किरदानी बुझबै।

तेतरी- अपने फुरने करै छथि आकि घरोक लोकक विचार छन्हि?

खजुरिया- एँह, हद करै छी। अहाँ नै देखै छिऐ जे आबक बेटा-बेटी माए-बापसँ केहेन पुछै छै।

तेतरी- से तँ ठीके कहै छी। मुदा सभ की एक्के-रंग होइए। हमरे घरबला छथि, मरैयौ बेर तक माइएक कहलमे रहला। बेटो ने मनाही केलकनि।

खजुरिया- बेटा की मनाही करतनि। चुमौन कऽ कऽ कनी घर आबए दियौ तखनि ने हुरयाहा देखबै। जहिना बुढ़ीकेँ अतर-गुलाबसँ मालिश करतनि तहिना ने बेटो-बेटीकेँ टेमपर खाइले देतनि।

तेतरी- सभ सतमाए की एक्के रंग होइए। ने सभ वियौहती नीके होइए आ ने सभ समदाही अधले होइए। पुरुखे की सभ एक्के रंग होइए?

खजुरिया- हँ, से तँ बेस कहलौं। मुदा ओहिना नै ने लोक बजैए।

तेतरी- से बाजह। गामेमे सोनमाकेँ देखै छिऐ। जहियासँ समदाही एलै तहियासँ घरमे लछमी आबि गेलै। से तँ मनुख-मनुखपर छै।

खजुरिया- मुदा नीके औतनि तेकर कोन बिसवास?

तेतरी- से तँ ठीके।

खजुरिया- मुदा..?

तेतरी- मुदा की? यएह ने जे जेहेन परिवारक लोक रहत तेहने ने नवका मनुख बनत।

खजुरिया- ई की विपति मास्टरकेँ बुझै छथिन?

तेतरी- हम तँ नीके बुझै छियनि।

खजुरिया- घुइयाँ पुरुखक चालि यएह बुझथिन। मुड़ी गोँति कऽ चललासँ हेतनि। महकारी जकाँ पुरुख होइए। तरे-तर तेना ने बिठुआ काटि लेतनि जे बुझबे ने करथिन।

तेतरी- जाए दियौ नीक की अधला अपना परिवारमे हेतनि तइसँ हमरा-हिनका की?

खजुरिया-	हमरा की? एना किए बजै छी। गाम की हमर नै छी जे जेकरा जे मोन फुड़तै से करत आ टुटुर-टुटुर देखैत रहब।
तेतरी-	अनकर झगड़ा मोल लेब।
खजुरिया-	किए ने लेब? झगड़ाक डर करब तँ एक्को दिन गाममे बास हएत।
तेतरी-	*(आँखि उठा कऽ ऊपर दिस देखि)* बड़ अबेर भऽ गेल। आइ बात-कथा सुनबे करब।
खजुरिया-	एकटा बात तँ कहबे ने केलियनि?
तेतरी-	की?
खजुरिया-	ढोरबा फेर चुमौन केलक हेन।
तेतरी-	ओकरा तँ मारे धियो-पुतो आ घरोवाली छइहे?
खजुरिया-	*(बिहुँसैत)* छठम छऐ।
तेतरी-	निरलज्जा-निरलज्जी सभ सभ उठा कऽ पीब नेने अछि। जहिना पुरुखक धनमंडल अछि तहिना मौगीक। एकरा सभले रौदी-दाही अबिते अछि।

❍ ❍

चारिम दृश्य-

(चिन्तामणिक दरबज्जा)

चिन्तामणि- *(स्वयं)* हे भगवान अधमरू जिनगीमे किए फँसौने छी। अइसँ नीक जे मौगैत दिअ। आशाकेँ जेते हृदेसँ लगबए चाहैत छी ओते ओ पिछड़ि-पिछड़ि हटैत जाइए आ जिनगीकेँ अन्हार बनौने जाइए। अपनो भ्रम भेल जे आशा-निराशा (अन्हार-इजोत) केँ शब्दकोषक शब्द मात्र बुझलिऐ। मुदा आइ बूझि रहल छी जे खाली शब्दकोषेक शब्द नै जिनगी छी। एते दिन माएओ-बापक उत्तरी गरदनिमे लटकने घर-घराड़ी उपटै छल मुदा आब तेसरो उत्तरी लटकए लगल। खैर, जे जिनगी देलह ओ तँ भोगबे करब। मुदा मरैओ बेर तक माछी जकाँ नाकपर नै बैसऽ देब। जाधरि (जाबे आँखि तकै छी तकै छी बन्न हएत-हएत)

(पुलकितक प्रवेश)

अहाँ के छी, किनकासँ काज अछि?

पुलकित- आदर्श स्कूलक चपरासी छी, बुद्धिधारीबाबू पठौलनि अछि।

चिन्तामणि- *(आँखि ऊपर उठबैत)* के...। बुद्धिधारीबाबू। आदर्श स्कूलक शिक्षक। ओ तँ हमरा नै जनै छथि, फेर...।

पुलकित- पता चललनि जे चिन्तामणिबाबूकेँ कन्या छन्हि। जँ ओ कन्याक बिआह विपतिबाबूक संग करए चाहथि तँ...?

चिन्तामणि- विपतिबाबू...।

पुलकित- हँ-हँ। ओहो सहयोगीएक रूपमे काज करै छथि।

चिन्तामणि- ओ अविवाहिते छथि।

पुलकित- नै। पत्नी मरि गेलखिन। दोहरा कऽ करता।

चिन्तामणि- *(व्यग्र होइत)* दोहरा कऽ करता। सौतीनक तर तँ नै भेल। मुदा दोती बरसँ कुमारि कन्याक बिआह...। की अपन बेटीक भरि-भरि दिनक उपासक पूजाक फल भगवान यएह देलखिन। मुदा उपाइए की? मृत्युकाल साधारण खढ़ोक आशा पाबि चुट्टी धारक धारामे उगैत-डूमैत जान बचाइए लैत अछि। आशा भेट रहल अछि। बाउ, उमेर केते छन्हि?

पुलकित- हम दुनू गोरे एक बत्तरिये छी। घरो एक्केठीन अछि।

(पुलकितकेँ निच्चाँसँ ऊपर माथ धरि निहारि-निहारि चिन्तामणि देखै छथि)

चिन्तामणि-	बालो-बच्चा छन्हि?
पुलकित-	हँ। एकटा बेटा एकटा बेटी छन्हि।
चिन्तामणि-	तखनि दोहरा कऽ किए बिआह करता?
पुलकित-	माए बूढ़े छन्हि, बिआह पछाति बेटी सासुरे बसए लगतनि। नँउऐ-कौंउऐ कऽ बँचलनि बेटा। बेटो सभ तेहेन ढाठी धऽ लेलक जे ओइसँ नीक बेटिए। जे कमसँ कम पावनि-तिहारमे नै सनेस तँ वेनो पठेबे करैए। तँए जुगक अनुकूल अपन-अपन आशा बना जिनगी चलबैत रही।
चिन्तामणि-	नीक-नहाँति अहाँक बात नै बुझलौं?
पुलकित-	अपने पढ़ल-लिखल नै छी मुदा संगत पाबि किछु बुझल अछि। आगू बढ़ैक होड़मे समाज बिखंडित भऽ रहल अछि जइसँ गामक दशा दिनानुदिन गिरले जा रहल अछि।
चिन्तामणि-	*(मुड़ी डोलबैत)* हँ, से तँ भाइए रहल अछि।
पुलकित-	अहीं कहू जे किसान परिवारमे जनम लेनिहार किसान बनै छला। पूर्वजक लगौल फुलवाड़ीकेँ कोर-कमठौनक संग पानि ढारै छला जइसँ समाजक हरीअरी बढ़ैत रहल। मुदा कल-कारखाना दिस घुसकि समाजक (गामक) घर खसा रहल अछि। एहेन स्थितिमे की कएल जाए।
चिन्तामणि-	बाउ, अहाँ चपरासी छी?
पुलकित-	हँ। मुदा विपतिबाबूक लंगोटिया संगी सेहो छी। हमर माए-बाप गरीब छला, नै पढ़ौलनि। ओ (विपतिबाबू) बी.ए. पास कऽ कऽ हाइ स्कूलमे शिक्षक बनला। मुदा बच्चेसँ जहिना रहलौं तहिना अखनो छी।
चिन्तामणि-	बेटा नै बेटी छी तँए जिनगीक प्रश्न अछि। ओना विआह लेल डेग उठबैमे ने कोनो बाधा अछि आ ने संकोच। मुदा जेते अधिकार हमरा अछि तइसँ मिसिओ कम माएकेँ नै छन्हि। तँए डेग उठबैसँ पहिने हुनको पूछि लेब जरूरी अछि। (जोरसँ) केतए छी कनी सुनि लिअ?
	(सावित्रीक प्रवेश)
सावित्री-	की कहलौं?
चिन्तामणि-	*(मुस्कीआइत)* तीन सालक चिन्ता हेट भऽ रहल अछि।
सावित्री-	*(बिहुँसैत)* से की? से की?

चिन्तामणि- गीताक बिआहक सूहकार आएल अछि। कनी बुझने-सुझने अबै छी। जँ किछु धएल-धरल विचार हुअए तँ अखने कहि दिअ।

सावित्री- राखल जोगाएल विचार की रहत। पेटीमे राखल पुरान साड़ी जकाँ तरेतर सभ गुमसरि गेल। पहिरै जोकर नै रहल। मुदा तैयो तँ कहबे करब जे नोर बहबैत बेटी सरापे नै।

चिन्तामणि- अहाँ अर्द्धांगिनी छी जेकर आड़िपर बेटा-बेटीक गाछ होइ छै। कोनो बात (विचार) जोर दऽ कऽ हँ नै कहाएब। अखनि समए अछि तँए मोनसँ विचार देब तखने डेग उठाएब।

सावित्री- बरक विषएमे किछु कहि दिअ?

पुलकित- शरीरसँ पूर्ण स्वस्थ, हाइ स्कूलमे शिक्षक छथि। धतपत तीस-पेंइतीसक अवस्था हेतनि। पहिल कनियाँ पछिला साल मरि गेलनि। तँए परिवार लेल दोहरा कऽ बिआह करब जरूरी छन्हि।

सावित्री- नौकरी करै छथि, तहूमे शिक्षक छथि। ई तँ दीब बात भेल। जाधरि नोकरी करै छथि ताधरि तलब भेटतनि आ छुटलाक (रिटायर) उत्तर पेन्शन। *(मुस्की दैत)* पाँच कर अन्न आ पाँच हाथ वस्त्रक दुख गीताकेँ नै हएत। गामक नाओं कहू?

पुलकित- धरमपुर।

सावित्री- गामो तँ दुसैबला नहियेँ अछि। लगो अछि। जाबे जीब ताबे आवा-जाही रहबे करत। *(पतिसँ)* एक-दूटा बात विचारणीय अछि।

चिन्तामणि- *(व्यग्र)* से की, से की?

सावित्री- जहाँ धरि उमेरक बात अछि ओहो परमपराक अनुकूले अछि। राजा दशरथ तीनटा बिआह केने रहथि। किए केने छला? अही दुआरे ने जे पहिल कन्याँसँ सन्तान नै भेलनि। प्रश्न अछि जे सन्तानक प्रतीक्षामे दस बर्ख समए लगले हेतनि?

चिन्तामणि- कनी सोझरा कऽ कहियौ?

सावित्री- सन्तान नै हेबाक घोषणा (निर्णए) दस बर्ख पछातिए ने होइ छै। तै बीच तँ ओकर प्रतिकार होइ छै। जोग-टोनसँ लऽ कऽ दबाइ-विड़ोमे दस बर्ख लगिए जाइत अछि।

चिन्तामणि- हँ, से तँ होइते अछि।

सावित्री-	पहिलसँ तेसर पत्नीक बीच पनरह-बीस बर्ख लगिए जाइत अछि। ऐ हिसावसँ लड़का (बर) उपयुक्त छथि। दोसर प्रश्न अछि दोसर पत्नीक।
चिन्तामणि-	हँ, से तँ अछिए।
सावित्री-	दोसर पत्नी तँ ओतए अधला होइत अछि जेतए सौतीन बनि जिनगी चलैत। से तँ नहियेँ अछि। रहल बच्चाक सतमाए होएब? सासु लेल तँ पुतोहुए हएत।
चिन्तामणि-	*(मुड़ी डोलबैत)* हँ, से तँ अछिए?
सावित्री-	ई तँ नीके भेल।
चिन्तामणि-	केना?
सावित्री-	*(हँसैत)* जहिना गुरुसँ श्रेष्ठ सतगुरु होइ छथि तहिना।
चिन्तामणि-	नै बुझलौं?
सावित्री-	माएसँ श्रेष्ठ सतमाए ऐ लेल श्रेष्ठ होइत जे माए अपन (कोखिक) सन्तानक सेवा करैत (पालैत-पोसैत) जहन कि सतमाए दोसराकेँ। जँ आन बच्चाक सेवा अपन बच्चा सदृश कियो करैत तँ वएह ने सतमाए भेली।
चिन्तामणि-	मुदा...?
सावित्री-	हँ। अपना समाजमे सतमाएकेँ सौतिनिया डाहक प्रतीक बुझल जाइत अछि। ठाम-ठीम अछिओ। मुदा (सत-माए) सतमाए तँ ओ भेली जे अपने बच्चा जकाँ दोसरोक बच्चाकेँ बूझि सेवा करए।
चिन्तामणि-	*(ठहाका मारि)* आगू बढ़ै छी।

❍ ❍

अंतिम दृश्य-

(चिन्तामणिकेँ पुलकित स्कूलक अँगनामे ठाढ़ कऽ विपतिबाबू आ बुद्धिधारी बाबूकेँ बजा अनैत) चारू गोटे बैसल।

बुद्धिधारी- अपनेक नाओं?

चिन्तामणि- लोक चिन्तामणि कहैए।

बुद्धिधारी- अपनेकेँ कन्या छथि?

चिन्तामणि- हँ।

बुद्धिधारी- *(विपतिबाबूकेँ देखबैत)* यएह बर (लड़का) छथि। सहयोगी छथि। हिनक पत्नी पछिला साल मरि गेलखिन। बृद्ध माए आ दूटा बच्चा छन्हि। आब अपन विचार देल जाउ?

चिन्तामणि- विद्यालयक आँगनमे बैसल छी तँए कहै छी। ओना हम बड़ गरीब छी। उनैस-बीस बर्खक बेटी अछि। तीन सालसँ बिआहक बात मोनमे नाचि रहल अछि मुदा केतौ नाकपर माछी नै बैस रहल अछि।

बुद्धिधारी- अपनेकेँ एक्को-पाइ खर्च नै हएत। विपतिबाबू कमाइ छथि। सभ खर्च करता।

चिन्तामणि- केहेन बात बजै छी। ई कहू जे लाम-झामसँ बरिआती नै जाएत। मुदा अपना दरबज्जापर सँ बेटी जमाएकेँ पाँच हाथ नव वस्त्र पहिरा अरिआति कऽ विदा नै करब से केहेन हएत?

बुद्धिधारी- जहन सम्बन्ध स्थापित कए रहल छी तहन भेद किए?

चिन्तामणि- जहिना आमक गाछकेँ दोसर गाछक डारिमे बान्हि कलम बनौल जाइत अछि तहिना ने दू परिवार मिलि बनैए। मुदा दुनूक अपन-अपन गुण तँ रहिते अछि।

बुद्धिधारी- नै बुझलौं?

चिन्तामणि- हमर कन्या मिथिलाक ललना छी। एकबेर जइ पुरुखसँ हाथ पकड़बैए जिनगी भरि स्वामी, पति आ गुरुभक्त बनि सेवा करैए। कहियो अपन सीमाक उल्लंघन नै करैए। भलहिं राम सन बेटाकेँ पिता वनबास दऽ देलखिन मुदा कौशल्या बात कहाँ कटलकनि।

बुद्धिधारी- से की?

चिन्तामणि- यएह जे रामपर जेते अधिकार पिता दशरथक छेलनि तइसँ कम तँ माए कौशल्याक नै छेलनि। मुदा कहाँ

	अपन अधिकारक प्रयोग केलनि। आँखि मुनि सुहकारि लेलकनि।
बुद्धिधारी-	*(नम्हर साँस छोड़ैत)* विपतिबाबूक परिवार अलग छन्हि। जेहने अपने छथि तेहने माए छथिन। दुनू बच्चा तँ गाएओक बच्चासँ कोमल आ सुशील अछि।
चिन्तामणि-	भाग्य हमरा बेटीक जे लगौल फुलवाड़ीक माली बनि सेवा करत।

अंतिम दृश्य, मिथिलाक बिआहक।

समाप्त।

२

एकांकी

कल्याणी

पात्र परिचए- कल्याणी

पुरुष पात्र-

जेलर-	५० बर्ख।
चन्द्रनाथ-	कल्याणीक भाय, ३५ बर्ख।
अनन्तकुमार-	कल्याणीक पिता, ६० बर्ख।
सूर्यदेव-	पढ़ल-लिखल ग्रामीण- ४० बर्ख।
निसकान्त-	पढ़ल-लिखल ग्रामीण- ३५ बर्ख।
क्षितिजदेव-	पढ़ल-खखल ग्रामीण- ३५ बख।

नारी पात्र-

कल्याणी-	पढ़ल-लिखल नवयुवती, २३ बर्ख।
प्रतिज्ञा-	पढ़ल-लिखल नवयुवती, २३ बर्ख।
शान्ती-	कल्याणीक माए। उमेर ५५ बर्ख।

पहिल दृश्य-

(जहलक दृश्य। जेलक भीतरसँ जेलर, कल्याणी, प्रतिज्ञा आ दूटा सिपाही निकलैत। फाटकक बाहर आबि कल्याणीयो आ प्रतिज्ञो पाछू घुरि जहलकेँ निहारि-निहारि देखैए।)

जेलर- अखनि धरि हम जेलर आ अहाँ दुनू गोटे कैदी छेलौं। मुदा आब जहिना अहाँ दुनू गोटे छी तहिना हमहूँ एकटा अदना मनुख छी। जेलक जिम्मेदार होइक नाते कहै छी जे जँ किछु अभाव भेल हुअए ओ बिसरि जाएब। संगे ईहो कहै छी जे पुन: कैदी बनि जहल नै देखी।

कल्याणी- *(मुस्कीआइत)* कहलौं तँ बड़ सुन्नर बात मुदा जैठाम एक्को इंच जमीन नारी लेल सुरक्षित नै अछि तैठाम...?

जेलर- की सुरक्षित?

कल्याणी- सुरक्षित यएह जे नारी लेल स्वतंत्र जिनगी कल्पनाक सिवा आरो की अछि। जाधरि नारी अपन शक्तिकेँ जगा संघर्ष नै करत ताधरि मनुखक जिनगीसँ उतरि पशुक जिनगी जीबैले बाध्य रहबे करत। तँए जरूरति अछि अपन शक्ति नारी जगत लेल उपयोग करए। जखने आजादी लेल डेग उठौत तखने अहाँक जेल आगू ऐबे करत।

प्रतिज्ञा- केते दिन जहलक डरे नारी अपन स्वतंत्र जिनगीकेँ बान्हि कऽ रखि सकैए। जेम्हर देखू तेम्हर नारीपर अत्याचारे-अत्याचार जहिना घरक भीतर तहिना घरक बाहर। सगतरि एक्के रामा-कठोला भऽ रहल छै। घरसँ निकलिते केतौ अपहरण तँ केतौ छेड़खानी सदतिकाल होइते रहैए। एहेन स्थितिमे इज्जत-आबरूक संग जीब कहाँ धरि संभव अछि।

जेलर- *(मुड़ी डोलबैत)* किछु अंशमे अहाँ कहब मानल जा सकैए।

कल्याणी- *(झपटि कऽ)* किछु अंशमे किए कहै छिऐ हँ, ई बात जरूर जे जहिना सभ मनुखक जिनगी समान नै अछि तहिना अत्याचारोक अछि। मुदा जेहेन माहौल बनल अछि ओइसँ की आभास भेट रहल अछि।

जेलर- *(नम्हर साँस छोड़ैत)* खैर, हमर ओकातिए केते अछि जे अहाँक सभ प्रश्नक उत्तर दऽ सकै छी। मुदा एते जरूर आग्रह करब जे पुन: जहलक आँखि नै देखी।

कल्याणी- जँ जहलक डर करब तँ जिनगी केना भेटत। हँ, ई बात जरूर जे छोटसँ छोट आ पैघसँ पैघ सैकड़ो घेराक बीच जहलो एकटा घेरा छी। मुदा ओकरा टपैक तँ दुइए टा उपए अछि। या तँ कूदि कऽ टपि जाए वा तोड़ि दिअए।

जेलर- *(मुड़ी डोलबैत)* धिया-पुताक खेल नै छी।

कल्याणी- मानै छी जे धिया-पुताक खेल नै छी मुदा अहूँ सुनि लिअ जे जइ पैरुख पाबि नर पुरुख कहबैक अधिकारी बनल अछि ओ सिरिफ पुरुषेक नै नारीओक धरोहर सम्पदा छी। अखनि धरि नारी जगतक नजरि ओइ दिशा दिस नै बढ़ल अछि तँए आँखि मूनि सभ अत्याचार झेल रहल अछि। जखने ओइ दिशा दिस देखि आगू डेग उठौत तखने...।

जेलर- *(मुस्कीआइत)* हमर शुभकामना अहाँ सभक संग अछि।

(कल्याणी आ प्रतिज्ञा आगू बढ़ैत। दुनू सिपाही फाटकक भीतर प्रवेश करैत। बीचमे जेलर ठाढ़ भऽ कल्याणी दिस देखैत। दू डेग आगू बढ़ि कल्याणी पाछू घुरि कऽ तकैत। दुनूक-जेलर आ कल्याणी- आँखिपर आँखि पड़िते कल्याणी मुस्कीअए दैत। जेलर आँखि निच्चाँ कऽ लैत। पुन: कल्याणी आगू डेग उठबैत। जेलरो भीतर दिस प्रवेश करैत। एकटा पएर भीतर आ एकटा पएर बाहर रहिते पुन: कल्याणी दिस देखैत। तै काल कल्याणीओ दुनू गोटे पाछू घुरि तकैत तँ जेलरपर नजरि पड़ैत।)

जेलर- *(दुनू हाथ जोड़ि)* अंतिम विदाइ।

कल्याणी- *(मुस्की दैत)* अंतिम विदाइ नै पहिल विदाइ। जाधरि अहाँक जहल रहत ताधरि एक नै हजरो बेर आएब।

(*फाटक बन्न कऽ जेलर भीतर जाइत अछि। कल्याणी आ प्रतिज्ञा दू डेग आगू बढ़ि)*

कल्याणी- अखनि धरि जहिना अहाँ कौलेजक एकटा छात्रा छी तहिना हमहूँ छी। मुदा आब तँ पढ़ाइक अंतिमे समए छी। परीक्षो भइए गेल। रिजल्ट निकलत जिनगीक लीला शुरू हएत।

प्रतिज्ञा- जिनगीएक लीला किए कहै छी नवालिगक सीमा सेहो टपि गेलौं। जहिया जेल एलौं तहिया ने नवालिग छेलौं। जइसँ देश आ समाजक प्रति ने कोनो अधिकार छेलए आ ने कोनो कर्तव्य। मुदा से तँ आब नै रहल। ओना बालबोधे जे किछु केलौं ओहो कोनो अधला थोड़े केलौं।

कल्याणी- अखनि धरि जे किछु भेल ओ बाल-बोधक खेल भेल। मुदा जहलक भीतर नवालिगक सीमा टपि वालिक भेलौं। १८ बर्ख पूरा भेल। जिनगी लेल आइ संकल्प ली जे जाधरि नारीपर अन्याए होइत रहत ताधरि चैनक साँस नै लेब।

प्रतिज्ञा- अखनि धरि ने अहाँकेँ ऐ रूपे हम चिन्है छेलौं आ ने अहाँ हमरा चिन्है छेलौं। तँए दुनू गोटे संकल्पक संग सप्पत ली जे जाधरि साँस रहत ताधरि संग-संग रहब।

कल्याणी- निश्चित। जे कियो ऐ धरतीपर जनम नेने अछि सभकेँ स्वतंत्र रूपे जीवैक अधिकार छे *(किछु काल चुप भऽ)* सृष्टिक शुरूहेसँ देखैत छी जे जहिना ऋृषि भेला तहिना ऋृषिका सेहो भेली। *(पुन: रूकि)* संग-संग जिनगी बितैबतौं पुरुख नारीक संग भीतरघात करैत-करैत सकपंज कऽ देलनि। जेकर परिणाम भेल जे ओकर पहाड़ सदृश रूप बनि गेल अछि।

प्रतिज्ञा- *(मुड़ी डोलबैत)* हँ, से तँ बनि गेल अछि। मुदा जहिना रसे-रसे बंधन सक्कत होइत गेल तहिना रसे-रसे तोड़ौ पड़त। एक्के बेर जँ सभ बंधनकेँ तोड़ए चाहब से संभव नै छै।

कल्याणी- *(मुड़ी डोलबैत)* ई तँ अछि। मुदा दुनियाँमे एहेन कोनो काज नै अछि जेकरा मनुख नै कऽ सकैए। तहन ई बात जरूर अछि जे जे जेहेन काज रहत ओइ लेल ओइ तरहक शक्तिक जरूरति पड़ैत। तँए जरूरी अछि जे जहिना अखनि हम दुनू गोटे मिलि संकल्प लेलौं तहिना आरोकेँ जोड़ि शक्तिक अनुकूल डेग उठाएब।

प्रतिज्ञा- हँ, से तँ कहलो गेल अछि जे ''जमात करए करामात।'' जेना-जेना दुर्ग टपैत जाएब तेना-तेना शक्तिओ बढ़ैत जाएत। जहिना बुन-बुन पानि मिलि धरतीपर ससरि धारा बनि धारक आकार बना समुद्रक रूप ग्रहन करैत तहिना ने मनुष्योक होएत।

❍ ❍

दोसर दृश्य-

(जहलक बाहरी छहरदेवाली टपि कल्याणी आ प्रतिज्ञा। दोसर दिससँ कल्याणीक भाए चन्द्रनाथ आ माए शान्तीकेँ देखैत तँ दोसर दिससँ शान्ती कल्याणीपर नजरि अटकौने। जेना शान्तीकेँ बघजर लगि गेल दुनू आँखिसँ नोर टघरैत। मुदा कल्याणी आ प्रतिज्ञाक मुहसँ खिलैत माने फुलाइत फूल जकाँ हँसी निकलैत।)

कल्याणी- *(आगू बढ़ि)* माए, अहाँ कनै किए छी? बेटी कोनो अधला काज कऽ जहल नै आइलि छलि। *(कहैत दुनू हाथे दुनू पएर पकड़ि)* अहाँ असिरवाद दिअ। जहिना समाजक आन माएसँ हटि अहाँ पढ़ैक छूट देलौं तहिना हमरो दायित्व होइत अछि जे समाजक कल्याणक दिशामे आगू बढ़ी। जाधरि परिवारक डेग आगू दिस नै बढ़त ताधरि समाज कोनो बनत?

(दुनू बाँहि पकड़ि शान्ती कल्याणीकेँ उठबैत। कल्याणी उठि कऽ माइक दुनू आँखिक नोर दुनू हाथसँ पोछि आँखिपर आँखि गरा आगूमे ठाढ़ि। शान्तीक आँखिसँ धरती, पहाड़, समुद्रक रूप छिटकैत तँ कल्याणीक आँखिसँ सिंहक रूप छिटकैत)

चन्द्रनाथ- अहाँ सभ ताबे एतै अँटकू। एकटा सवारी नेने अबै छी। *(कहि भीतर जाइत)*

प्रतिज्ञा- चाची, आइ धरि नारी जगत, कमला-कोसीक धारक संग कारी मेघक बरखा सदृश अदौसँ नोर बहबैत आएल अछि मुदा जाधरि ओइ नोरकेँ बहैक कारणकेँ नै रोकल जाएत ताधरि बहब केना बन्न हएत? जहिना बेटी कल्याणी छी तहिना प्रतिज्ञो छी। असिरवाद दिअ।

शान्ती- *(माइक नजरिसँ नजरि मिला)* तूँ सभ जहल किए एलह?

कल्याणी- परीक्षाक आखिरी दिन एक्केटा विषएक परीक्षा रहै। जे दोसर खेपमे माने दोसर सत्रमे रहै। चारि बजे समाप्त भेल। ओना प्रश्न हल्लुके बूझि पड़ल। जहाँ सवाल पढ़लौं आकि मोन हल्लुक भऽ गेल। नीक जकाँ लिखलौं। डेरा अबैत रही आकि रस्तामे देखलिऐ...।

शान्ती- की देखलहक?

कल्याणी- आगू-पाछू विद्यार्थी (संगी) सभ डेरा अबैत रहै। हम दुनू गोरे (कल्याणी आ प्रतिज्ञा) पाछू रही। हमरासँ करीब चारि लग्गी आगू रूपा असगरे अबैत रहै। मोटर साइकिलपर एकटा युवक पाछूसँ जाइत रहै। रूपा लग आबि पहुँचते मोटर साइकिलेपर सँ देह परहक ओढ़नी खींचि लेलक।

(ओढ़नी खिंचैक सुनि शान्ती चौंकि गेलि। जेना बाँसक दू टुकड़ी रगड़सँ आगिक लुत्ती छिटकैत तहिना शान्तीक आँखिसँ लुत्ती छिटकल)

शान्ती- अँए, एते अन्याए?

प्रतिज्ञा- चाची, अहाँ गाम-घरमे रहै छी तँए नै देखै छिऐ। एहेन-एहेन अन्याए हजारक हजार रोज होइए।

शान्ती- राही-बटोही किछु ने कहै छै?

प्रतिज्ञा- की कहतै। निर्लज पुरुख नारीक लाज (इज्जत) थोड़े बुझैए। उ सभ तँ नारीकेँ खेलौना बनौने अछि। एक्के पुरुख अपन बहु-बेटीकेँ इज्जतक नजरिऐ देखैए मुदा दोसराकेँ रण्डी-बेश्या बुझैए। *(क्रोधसँ शान्ती थर-थर कँपए लगल। दुनू आँखि लाल भऽ गेलै)*

शान्ती- तब की भेलै?

प्रतिज्ञा- वेचारी रूपा, आगू-पाछू ताकि, मुड़ी गोति आगू बढ़ैत गेल। मुदा हमरा दुनू गोरेकेँ नै देखल गेल। सड़कक कातेमे पीचक पजेबा उखड़ल रहै। दुनू गोटे पजेबा हाथमे लऽ दौग कऽ ओकरापर फेकलौं। एकटा तँ हूसि गेलै। मुदा दोसर कपारमे लगलै।

शान्ती- वाह-वाह, भगवान हमरो औरुदा तोरे सभकेँ देथुन। भाँइमे कियो दादा हुअए। नारी-जातिक सान बचेलौं। तेकर उत्तर की भेल?

प्रतिज्ञा- ओ मोटर साइकिलपर सँ खसि पड़ल। कपारसँ खून गड़-गड़ चुबए लगलै। हल्ला भेलै। तखने ट्रैफिक पुलिस आबि कऽ दुनू गोटेकेँ पकड़ि पहिने थाना लऽ गेल। थानासँ जहल पठा देलक।

शान्ती- मुदा हम तँ दोसरे-तेसरे बात सुनलौं।

प्रतिज्ञा- की?

शान्ती- केते बाजब कोइ किच्छो तँ कोइ किच्छो बजैए। एक गोरे कहलक जे दुनू गोटे परीक्षामे चोइर करैत पकड़ल गेल।

प्रतिज्ञा- चाची, झूठकेँ सत्य बनाएब आ सत्यकेँ झूठ बनाएब छुद्दर पुरुख सभक गुण छी। जहिना बहिन कल्याणीक माए छिऐ तहिना हमरो छी अहाँ लग झूठ बाजब।

शान्ती- *(किछु मोन पाड़ैत)* बेटी प्रतिज्ञा, तूँ जे कहलह ओ अपनो मोनमे अबैए। मुदा बिना पुरुखक मदतिऐ नारी जीब केना सकैए?

कल्याणी- *(उत्साहित भऽ)* अखनि धरि नारीकेँ पुरुख अन्हारमे रखलक। जइसँ ओकरा अपन सभ गुण हरा गेलइ। घरक भीतर रखि ओकरा दुनियाँक बात बुझै नै देलक। जइसँ ओ परती खेत नहाँति सभ किछु रहितो पानि-बिहाड़ि, जाड़, रौद, भुमकमक चोटसँ निष्क्रिय भऽ गेल।

शान्ती- ऐ बातकेँ नारी किए ने अखनि धरि बूझि रहल अछि?

कल्याणी- एकरो कारण छै। सृष्टिक निर्माण पुरुख नारीक संयोगसँ होइत अछि। जहिना गाड़ी, दू पहियासँ चलैए, तहिना। मुदा नारीक पेटमे नअ मास रहि बच्चाक जनम होइत अछि। ऐ दौरमे नारीकेँ कठिन कष्टक सामना करए पड़ैए। जेकर लाभ पुरुख उठौलक।

शान्ती- *(मुड़ी डोलबैत)* हूँ...।

कल्याणी- बच्चाक पालन खाली पेटे धरि नै जनम लेला पछातिओ होइत अछि। जइमे घेरा जाइत अछि। घेराइत-घेराइत एते घेरा जाइत जे जिनगी बदलि गुलाम बनि जाइत अछि।

शान्ती- *(मुड़ी डोलबैत)* एहेन स्थितिमे नारी पुरुखक बरबरि केना कऽ सकैए?

प्रतिज्ञा- *(उत्तेजित भऽ)* कए सकैए, चाची।

(सवारी लऽ कऽ चन्द्रनाथक प्रवेश)

चन्द्रनाथ- चलै चलू। सवारी आबि गेल।

❍ ❍

तेसर दृश्य-

(अनन्त कुमारक घर। दरबज्जापर एकटा चौकी राखल आ बगलमे कुरसीपर अनन्त कुमार बैसि, आँखि बन्न केने)

अनन्तकुमार- (स्वयं) दिनो-दिन जिनगी जपाल भेल जा रहल अछि। जे दिन जे क्षण बीत रहल अछि ओ नरकक वास भऽ रहल अछि। मुदा मऽरबो तँ हाथमे नहियेँ अछि अपने हाथे आत्महत्यो केना कए लेब?

(चाह नेने शान्तीक प्रवेश। पतिक हाथमे कप पकड़बैत शान्ती चौकी बगलमे ठाढ़। एक घोट चाह पीबि अनन्त कुमार शान्ती दिस देखि)

अनन्तकुमार- जिनगी भार भऽ गेल। अकाजक अन्न सन देबकँ हत्या करैत छी। नीरस जिनगी कोकनल गाछ सदृश होइत अछि। जे पील, गराड़क घर बनि जाइत अछि तहिना जिनगी बूझि पड़ैए।

शान्ती- सोग केलासँ सोग थोड़े मेटाएत। सोग तँ समस्याकँ जनम दइए। जे बिना केने थोड़े मेटाएत?

अनन्तकुमार- जखने घरसँ निकलै छी तखने रंग-बिरंगक अड़कच-बथुआ काचर-कुचर सुनए लगै छी। केकरा की कहियौ। केते लोकसँ माथ चटाउ। केकरो मुँहमे जाबी लगौनाइ असान छी।

शान्ती- केते दिन मुड़ी गोँति समाजमे जीब?

अनन्तकुमार- नीक हएत जे झब दए कल्याणीक बिआह करा दिऐ। आन गाम गेलापर तँ लोकक बात नै सुनब। जहिना पोखरिक पानिक हिलकोर जे दू-चारि दिनमे शान्त भऽ जाइ छै तहिना असथिर भऽ जाएत।

(चन्द्रनाथक प्रवेश)

शान्ती- भने बउऔ आबिऐ गेल। दुनू बापूत छीहे विचारि कऽ रस्ता नकालि लिअ।

चन्द्रनाथ- *(अकचकाइत)* कथीक रस्ता माए? कोन एहेन दुर्ग टूटि कऽ खसि पड़ल जे बाबूकँ हम विचार देबनि।

अनन्तकुमार- बौआ, नीक की बेजाए, अपना परिवारमे नै बाजब तँ केतए बाजब। जखने गाम दिस टहलै छी, सोझहा-सोझही तँ नै मुदा अढ़ दाबि-दाबि मौगीओ आ मरदो की बजैए तेकर कोनो ठेकान नै।

चन्द्रनाथ- की बजैए?

अनन्तकुमार- कियो बजैए जे कल्याणी जहल जा कुल-खनदानक नाक-कान कटौलक। तँ कियो बजैए जे केहेन माए-बाप छै जे बेटीक वएस बितल जाइ छै मुदा बिआह करैले नीने ने टुटै छै।

चन्द्रनाथ- बाबू, जहिना दिनक उनटा राति होइ-छै तहिना नीक अधलाक बीच सेहो होइ-छै ज्ञान-अज्ञानक बीच सेहो होइ छै। धरतीपर ओते अधलो अछि। हमरा बुझने तँ अधले बेसी अछि। किऐक तँ नीक एक्के तरहक होइ छै जहनकि अधला अनेको रंगक-रावण-कौरबक सखा जकाँ।

अनन्तकुमार- तेतबे नै ने, ईहो बजैए जे पढ़ा-लिखा कऽ बेटी तेहेन बना लेलक जे चौक-चौराह पुरुखे जकाँ मुँह-कान उधारि निधोख भाषणो करैए।

चन्द्रनाथ- बाबूजी, हमर बहिन कुम्हरक बतिया नै ने छी जे ओंगरी बतौने सड़ि जाएत। जँ कियो आँखि उठौत वा ओंगरी बतौत तँ ओकर आँखिओ फोड़ि देबै आ ओंगरिओ काटि लेबै। अपन माए-बहिन दिस देखह जे माटिक मुरुत बनौने अछि।

शान्ती- बौआ, हम दुनू परानी तँ पाकल आम भेलौं जाबे जीबै छी, ताबे जीबै छी। कखनी खसि पड़ब तेकर कोन ठीक। मुदा तूँ दुनू भाए-बहिन तँ से नै छह। भगवान करथुन जे हँसैत-खेलैत शतायु हुअह।

(कल्याणीक प्रवेश)

अनन्तकुमार- बेटी कल्याणी, तोरा सभले ओइ गीरहकँ तोड़ि देलौं जइ बंधनक बीच कन्या अज्ञानक काल-कोठरीमे जीबैए।

कल्याणी- बाबूजी, जहिना अहाँ समाजमे पहिल डेग उठा नव फुलक गाछ रोपलौं तहिना अहाँक आत्मा एक नै अनेक फुलक फुलवाड़ी लगौत।

शान्ती- बेटी, भगवान हमरो दुनू बेकतीक औरुदा तोरे दुनू भाए-बहिनकँ देथुन। जाबे बच्चा छेलह ताबे जतए धरि भऽ सकल सेवा केलिअ। आब तँ तोरे सबहक दिन-दुनियाँ भेलह, हम सभ तँ अस्ताबल भेलौं।

कल्याणी- माए, नारीक संग अत्याचार करैत-करैत पुरुख एहेन अभ्यस्त भए गेल अछि जे उचित-अनुचितक सीमे समाप्त भऽ गेल छै। जइसँ नारी खसैत-खसैत एते निच्चाँ खसि पड़ल अछि जे स्वरूपे समाप्त भऽ गेल अछि।

अनन्तकुमार- *(मुड़ी डोलबैत)* हँ, से तँ भऽ गेल अछि।

कल्याणी- बाबू, ई दुनियाँ कर्मभूमि छी "वीर भोग्या बसुंधरा" जे जेहेन कर्म करत ओ ओहन फल पौत। जहिना डोरीक एक भत्ता अहाँ तोड़ि हमरा अन्हारसँ इजोतक रस्ता खोललौं। तहिना एक-एक भत्ता तोड़ि नारी जगतक बन्धन तोड़ि देबै।

अनन्तकुमार- बंधन तँ सक्कत अछि मुदा ओकरा तोड़नौं बिना तँ कल्याण नहियेँ अछि। मुदा ऐ लेल ज्ञान, साहस आ धैर्यक जरूरति अछि।

कल्याणी- *(मुस्की दैत)* पैरुख सिरिफ पुरुखे लेल नै नारीओ लेल विधाता देने छथिन। जरूरति अछि ओकरा पकड़ैक। हमहूँ आब नवालिग नै बालिक भेलौं तेतबे नै, किरिणक डोरसँ सुनि सेहो देखि लेलौं। जहिना सृष्टिक विकासमे पुरुख-नारी समान अछि तहिना जाधरि दुनूक बीच समानता नै आओत ताधरि चैनक साँस नै लेब

अनन्तकुमार- बहुत कष्ट हएत?

कल्याणी- *(हँसैत)* ‘‘जीवन नया मिलेगा, अंतिम चिता में जल के’’। जहिना भिनसुरका सुरूज देखने दिनक अनुमान होइए तहिना तँ नवालिगक आड़ि हमहूँ जहलेमे टपलौं किने।

❍ ❍

चारिम दृश्य-

(दरबज्जाक चौकीपर चद्दरि ओढ़ि, मुँह उधारने अनन्त कुमार पड़ल। पँजरामे शान्ती बैसल)

शान्ती- *(देह छूबि)* बोखारसँ देह जरैए आ अहाँ जिद्द बन्हने छी जे दरबज्जापर सँ अँगना नै जाएब।

अनन्तकुमार- आइ धरि परिवार अँगने भरि रहल मुदा कल्याणी सन बेटी कुलमे जनम लेलक। जे आँगनसँ निकलि समाज रूपी परिवारमे रहए चाहैए, बाप होइक नाते हम दरबज्जो धरि नै अरिआति देबै।

शान्ती- कहलौं तँ ठीके मुदा माए-बाप, बेटा-बेटीकेँ जनमे ने दइ छै करम तँ अपने काज करै छै।

अनन्तकुमार- हमरा ऐ परिवारक कोनो भार नै अछि जहिना बाबू दरबज्जा बना कए गेला तहिना अंतिम साँस धरि दरबज्जाक रक्षा माने मान-सम्मान करैत रहब।

(चन्द्रनाथक प्रवेश)

चन्द्रनाथ- *(अवितहि)* बाबू किए, चद्दरि ओढ़ने छिऐ?

शान्ती- बोखारसँ आगि फेकै छन्हि। केतबो कहै छियनि जे पुरबा लहकै छै, चलू आँगन, से कहै छथि जे अंतिम समैमे दरबज्जापर प्राण छोड़ब। पुरबा-पछबाक काज छिऐ। बहनाइ, बहऽ।

चन्द्रनाथ- बाबू, जे बात अहाँ आइ बजलौं से पहिने कहाँ कहियो बाजल छेलौं।

अनन्तकुमार- तोहर प्रश्नसँ हृदए जुड़ा गेल बौआ। माए छथुन तँ फुटल ढोल। भरि दिन पनचैती केने घुरती जे सभ शान्तीसँ मिलि-जुलि कऽ रहू। मुदा जहिना शक्ति बढ़ल जाइए तहिना हिनकर पनचैतीओ बढ़ल जाइ छन्हि।

चन्द्रनाथ- *(ठहाका मारि)* हूँ-हूँ...।

शान्ती- बुढ़ा तँ नीक-अधला सभ दिन कहलनि। जखनि-जुआन रही तखनि बरदास भेल आ आब तामस उठत। दुनियाँमे जँ कियो संग पुरलनि तँ सभसँ बेसी यएह ने पुरलनि। मुदा आब भगवान अन्याए केलनि जे पहिने हमरा नै ओछाइन छड़ौलनि।

अनन्तकुमार- नीक हेतह जे कल्याणीओ केँ सोर पाड़ि लहक।

(चन्द्रनाथ भीतर प्रवेश। कल्याणीक संग मंचपर प्रवेश।)

कल्याणी- बाबू, किछु होइए?

अनन्तकुमार- नै।

शान्ती- की कहथुन। बोखारसँ देह जड़कै छन्हि।

कल्याणी- कोनो दबाइ नै देलहुन?

अनन्तकुमार- दबाइ खाइबला रोग नै छी बेटी। मोनमे एते खुशी आबि गेल अछि जे सौंसे देह हँसैए।

कल्याणी- *(मने-मन सोचैत। मुँहक पोज सुख-दुखक यएह अवस्था छी)* माए किछु कहै छथि अहाँ किछु कहै छी? *(आवेशमे अबैत)* किए बजेलौं?

अनन्तकुमार- केतए गेल छेलह?

कल्याणी- महिलाक एकटा बैसारक आयोजन करए चाहै छी जइमे विधवा समस्याक सम्बन्धमे विचार करब।

अनन्तकुमार- ई तँ छोट समस्या छह। अखनि नव उत्साह छह पैघ समस्याकेँ नजरिमे रखि डेग उठाबह।

कल्याणी- *(विस्मित होइत)* केना ऐ समस्याकेँ छोट समस्या कहै छिऐ।

अनन्तकुमार- भने तँ समाज दिस डेग उठेबे केलह, बुझवे करबहक। मुदा पहिने समाजकेँ पढ़ए पड़तह। *(उठि कऽ बैसैत)* चद्दरि उतारि सिरमापर रखि दुनू पएर मोड़ि कए बैसैत सभ कियो एकठाम बैसह।

(चारू गोटे चौकीपर बैस जाइए।)

अनन्तकुमार- सभकेँ अपन परिवारमे, एक सीमा धरि लाज-विचार करक चाही माइए छथुन पहिने हिनका विषएमे सुनि लाए।

(पतिक बात सुनि शान्ती देह-हाथ समेटि सांकांक्ष होइत बैसैत। चन्द्रनाथ मुड़ी गोति लेलक। कल्याणी पिताक आँखिपर आँखि गड़ा लेलक।)

अनन्तकुमार- जहियासँ माए एलखुन तहियासँ जिनगीक अंतिम पड़ाव धरि संगे छी। गुण-अवगुण मनुखमे होइते अछि। मुदा सदतिकाल दुनूपर नजरि रखि गुणकेँ बढ़ेबाक आ अवगुणकेँ कम करबाक कोशीस करक चाही। जइसँ नीक रस्ता पकड़ि आगू बढ़ब।

कल्याणी- ई तँ बड़ कठिन काज छी, बाबू।

अनन्तकुमार- *(मुस्की दैत)* हँ, ई विवेकक काज छी। अही दुआरे मनुख सभ जीवसँ ऊपर भेल। ओना ऊपर होइक दोसरो कारण ई अछि जे धरतीपर जेते जीव-जन्तु अछि तैमे मनुख अंतिम रूप छी।

कल्याणी- माइक चरचा करए लगलिऐ?

अनन्तकुमार- हँ। देखहक, ऐ धरतीपर अनेको लोक अछि। जेकर सीमा निर्धारित कर्म आ ज्ञान केने अछि। ऐ अर्थमे माए बहुत दूर छथुन। मुदा अहू अवस्थामे आत्मा, माने विवेक सएह कहैए जे अखनो धरि दोसराक पैतपाल करबाक शक्ति छन्हि।

चन्द्रनाथ- *(मुड़ी उठा)* एते दिन किए...?

अनन्तकुमार- हँ, ठीके तूँ पूछए चाहै छह। जहिना माली, बिना फूलक बीआ देखनौं पात देखि, बूझि जाइए जे ई अमुक फूलक गाछ छी। तहिना कल्याणीकें देखि विवेक जगि गेल।

चन्द्रनाथ- एते दिन विवेक सूतल छेलै?

अनन्तकुमार- नै बौआ, जहिना आमक गाछक जड़िमे जनमल तुलसी गाछक बाढ़ि ठमकि जाइए तहिना ठमकि गेल छेलै। मुदा कल्याणीक आँखिक ज्योति जहिना सुनयनाक बेटी सीताक छेलनि तहिना बूझि पड़ैए। तँए अनासुरती विवेक पोनगि गेल।

कल्याणी- माए, बाबूक संग अहूँ असिरवाद दिअ।

शान्ती- अखनि धरि जे डीह, पुरखाक कएल काजक इतिहास छी ओकरा जीबित दुनू भाए- बहिन मिलि रखब।

कल्याणी- झाँपल-तोपल बात अहाँक नै बूझि सकलौं।

शान्ती- हम तँ बेसी बिसरिए गेलौं। बाबूए कहथुन।

अनन्तकुमार- बेटी कल्याणी, पहिने परिवार बूझि लहक। तूँ दुनू भाए-बहिन छह। जहिना तूँ घरसँ निकलि दोसर घर जेबह तहिना दोसरा घरसँ अपनो घर औती। ऐसँ मनुखक स्थानान्तर (ट्रान्जेक्शन) शुरू भेल। ओना अपनो परिवारमे लड़का-लड़की होइत (जनम) अछि, किए दोसर परिवारसँ सम्बन्ध जोड़ल जाइए?

(चन्द्रनाथ बहिन दिस हाथ बढ़ौलक, कल्याणी भाइक हाथमे हाथ रखलक। माटिक मूर्ति जकाँ अनन्तकुमार देखैत। अपने मने शान्ती बरबराए लगली)

शान्ती- सासु-ससुरक बनौल परिवारकें अखनि धरि निमाहि रहल छी। जहिना बूढ़ा दुआरपर आएल अभ्यागतकें बिना हँसौने नै जाइ दइ छेलखिन तहिना अखनि धरि निमाहल।

कल्याणी- ई तँ काजक भार भेल, माए। मुदा असिरवादो ने चाही?

शान्ती- बेटी, सामाक माए-बाप जकाँ, तोहर माए-बाप नै छथुन। जहिना सामा लेल चकेबा सभ किछु तियागि संग पुरलक तहिना तोरो भाए करथुन।

(चन्द्रनाथकें भारसँ दबैत देखि अनन्त कुमार)

अनन्तकुमार- हँ, कहै छेलिअ। जहिना शंकर बीज उन्नतिशील होइत तहिना मनुष्योक प्रक्रिया अछि। (बात बदलैत) सदतिकाल माए माथ खोड़ैत रहै छथुन जे किए बेटीक (कल्याणीक) बिआह अनठौने छी। मुदा हम अनठौने कहाँ छी।

कल्याणी- *(आँखिलाल केने)* बाबू...।

अनन्तकुमार- *(मुस्कीआइत)* बेटी हुनको विचार अधला नहियेँ छन्हि। बेटीक प्रति माएक ममता वेसी होइ छै। मुदा परिवारमे बिआह साधारण

काज नै छी। तहूमे अखनि, सभ तरहक संक्रमणक प्रक्रिया चलि रहल अछि।

चन्द्रनाथ- की संक्रमण?

अनन्तकुमार- पहिने अपन इतिहास बूझि लाए। अदौमे स्वयंवर प्रथाक चलनि छल। जहिक माध्यमसँ माए-बाप बेटा-बेटीकेँ भार दऽ देलकनि। मुदा आइ की देखै छहक जे तेते ओझरी लगि गेल जे जेते सोझरबैक रस्ता अपनौल जाइए ओते ओझरी बेसिआइए जाइ छै।

कल्याणी- बाबू, हमहूँ अबोध बच्चा नै छी बालिग भेलौं। तँए...।

अनन्तकुमार- बिल्कुल ठीक सोचै छह। जखनि महिलामे पेंइतालीस-पचास बर्ख धरि सन्तान उत्पन्न करबाक शक्ति रहैए तखनि कम उमरमे बिआह तँ बड़ जरूरी नहियेँ भेल?

कल्याणी- असिरवाद दिअ। समाजक बीच किछु करबाक जिज्ञासा भऽ गेल अछि।

अनन्तकुमार- बेटी, हृदेसँ असिरवाद दइ छिअ। जहिना अदौमे कोनो अछूत जाति जखनि कोनो गाममे प्रवेश करै छल तखनि कोनो एहेन बाजा बजबै छल जे लोक बूझि जाइ छेलै।

कल्याणी- *(चकोना होइत)* की कहि देलिऐ?

अनन्तकुमार- पुरना गप कहलिअ। आब तँ गीताक जुग एलै। तँए जहिना कृष्ण कुरुक्षेत्रमे शंखक आवाजसँ अपन जानकारी दइ छेलखिन। तहिना...।

कल्याणी- *(आँखि-कान चकोना करैत चारू भाग देखि)* कनी बुझा कऽ कहियौ?

अनन्तकुमार- समाजमे किछु करए चाहै छह तँ काल्हिए बेरू पहर दुर्गास्थानमे बैसार करह।

कल्याणी- काल्हिसँ नीक जे रवि दिन बैसार करब नीक रहत। ओइमे नोकरीओ-चाकरीओ सभ रहता।

अनन्तकुमार- नोकरी-चाकरी कए कऽ जे गामक नास केलक ओकरा बुते गाम बनौल हएत। जहिना भिनसुरके सुरूज देखलासँ दिन भरिक अनुमान लोक कऽ लइए तहिना मनुखक किरदानीए देखि कऽ मनुखकेँ चिन्हए पड़तह।

कल्याणी- हुनका बुते केना गामक विचार कएल हेतनि।

अनन्तकुमार- *(खिसिआ कऽ)* दिल्ली सरकारमे सभसँ बेसी बिहारक रेलमंत्री भेला। मुदा की देखै छहक? जेकरा तूँ अबोध कहै छहक ओकर जिनगीओ छोट छै। जिनगीक समस्यो कम होइत अछि।

कल्याणी- अखने जा कऽ ढोलियाकेँ ढोलहो दइले कहि अबै छियनि। साँझूपहर ढोलहो दऽ देब।

पाँचम दृश्य-

(दुर्गास्थानक आगूमे एक भाग पुरुख एक भाग महिला बैसल। एकटा डायरी, पेन नेने महिला दिससँ आगूमे कल्याणी-प्रतिज्ञा। पुरुख दिससँ सूर्यदेव, क्षितिजदेव, निसकान्त बैसल।)

सूर्यदेव- आजुक बैसार लेल कल्याणी आ प्रतिज्ञाकेँ हृदेसँ शुभकामना दइ छियनि जे एकटा नव परम्पराक शुभारंभ केलनि। आशा संग आगू बढ़ति सएह शुभकामना।

कल्याणी- भाय साहैब, अहाँ सभ तरहेँ अगुआएल छी तँए आगूक बाटक जेते ज्ञान अहाँकेँ अछि ओते हम थोड़े बुझै छी।

(बिच्चेमे निसकान्त)

निसकान्त- सुरजू भाय, हमरो बात सुनि लिअ। काल्हिए दुनू परानीक झगड़ाक पनिचैतीमे गेल छेलौं। वेचारा विसनाथकेँ देखिते छिऐ जे डेढ़ सौ रूपैआक कमाइ घर जोड़ैयामे करैए। सभ दिन कमा कऽ अबैए आ घरवालीक हाथमे दऽ दइ छै। घरवाली केहेन जे टी.भी. किनैले पाइ जमा करैत जाइए। रौद-बसातमे काज करैबलाकेँ एकटा गंजीसँ थोड़े पार लगतै। तइले घरवाली पाइए ने दइए।

कल्याणी- *(मुड़ी डोलबैत)* की पनचैती केलिऐ?

निसकान्त- सँए-बहुक झगड़ा पंच लबरा। हम नै बुझै छिऐ जे पावरक लड़ाइ छी। दुनू गोटेकेँ थोड़-थाम लगा देलिऐ। दू विचारक लड़ाइ हमरे बाप बुते फड़िआएल हएत।

सूर्यदेव- अच्छा एकटा कहऽ जे दुनू गोटेमे घरक गारजन के छी?

निसकान्त- उँ-हूँ सौंसे गामेमे सबहक घरमे मौगीएक जुति अछि। एहेन जे लोकक दशा भेल छै से किए? कमाइ छै कोइ, हुकुम केकरो। कोनो घर आकि कोनो गाम, जाबे मरदक जुतिमे नै चलत ताबे ओहिना गाम आगू मुहेँ ससरि जाएत?

कल्याणी- कविलाहाक खेल देखबै। दिन पनरहम गुरुकाका कानि-कानि कहैत रहथि जे सभ दिन परदा-पौसकेँ मानलौं। पुतोहुजनीकेँ बेटा नोकरी लगा देलकनि। दस कोसपर स्कूल छन्हि। दुनू परानी जे जेतए छथि, खाइ-पीबै राति धरि घूमि कऽ अबै छथि। बेटा तँ बेटा भेल मुदा पुतोहुक सेवा सासु कहनि, ई हमरा पसिन नै अछि?

सूर्यदेव- ई नै पुछलहुन जे समए एना किए भेल?

निसकान्त- आठ घंटा खटनी पछाति जे समए बँचैए तेतबे ने समाजमे समए लगाएब ओते जे पुच्छा-पुच्छी करैए लगब, से ओते निचेन रहै छी।

कल्याणी- भैया, नारीकेँ बरबरि अधिकारक हवा चलि रहल अछि से की?

सूर्यदेव- मदारी सबहक खेल छी। नारी, पुरुखसँ हीन केना बनैत गेल? जाधरि ऐ इतिहासकेँ नै देखब ताधरि कारण केना पाएब। केकरोसँ अधिकार मंगबै? ऐ लेल विकासक प्रक्रियाकेँ नीक जकाँ बुझए पड़त

कल्याणी- काज केना शुरू कएल जाए, भाय।

सूर्यदेव- बहुत बातक जरूरति अखनि नै अछि। मुदा किछु बात कहि दैत छी। पहिल, नारीकेँ चिन्हैले नजरि ओतए दिअए पड़त जैठाम हवाइ जहाजमे उड़ैत, इलाइची फोड़ि-फोड़ि मुँहमे दैत जिनगी अछि तँ दोसर दिस भरि-भरि छाती पानि टपि (खच्चा, धार) भीजल कपड़ा पहिरि गोबर बिछैक जिनगी अछि।

कल्याणी- *(नम्हर साँस छोड़ैत)* अद्भुत बात भाय अहाँ कहलौं।

सूर्यदेव- कल्याणी, अहाँ अखनि फुलाइत फुलक कली छी। तँए जरूरति अछि शुद्ध माटि-पानिक। प्रत्येक साल समाजमे माने गाममे सएसँ ऊपर आन गामक बेटी अबै छथि। गामक बेटी जेबो करै छथि। प्रश्न उठैत सिरिफ देहेटा अबैत-जाइत आकि लूरि-बुइध सेहो अबैत जाइत अछि।

कल्याणी- अखनि तँ आरो विकट भऽ गेल अछि जे देशक एक कोनसँ दोसर कोनमे रहनिहारक (पालल-पोसल) बीच सम्बन्ध स्थापित रहल। जइसँ खान-पान, बात-विचार लूरि-ढंग सभ टकरा रहल अछि।

सूर्यदेव- अहिना खाइ-पीबैमे देखियौ। एक आदमीक (परिवारक) एक दिनक खर्च जेते होइत अछि दोसर दिस ओहन परिवारक भरमार अछि जइ परिवारमे दसो-बर्खक आमदनी ओते नै छै। केकरो असली नोर चुबै तब ने से तँ पियौजक झाँसक नोर चुबबैए।

कल्याणी- खेती-बाड़ीक की स्थिति अछि?

सूर्यदेव- सरकारी मेला लगल। गाममे चारिटा ट्रेक्टर चलि आएल। एक तँ बाढ़िमे बारह आना बड़द गाममे मरि गेल, दोसर जे चारि आना बँचल ओहो सभ गोबर उठबै दुआरे बेचि लेलनि। अखनि गाममे एक्कोटा बड़द नै अछि। ले बलैया ट्रेक्टर कदबामे सकबे ने करै छै। खेती कोनो हएत?

कल्याणी- अजीव-अजीव बात सभ कहै छी, भैया?

सूर्यदेव- केते कहब बहिन। जेते खर्चमे पहिने लोक प्रोफेसर बनै छला तेते अखनि बच्चाक स्कूलमे खर्च हुअ लगल अछि। केकर बेटा पढ़त। शिक्षा केहेन भऽ गेल अछि धोती-कुरताबला आ पेन्ट-कोटबला अपनामे रगड़ केने छथि जे हम नीक तँ हम

नीक। के फड़िऔत? जहनकि प्रश्न नान्हिटा अछि जे जइसँ जिनगी नीक-नहाँति आगू मुहेँ समैक संग ससरै।

समाप्त।

३

एकांकी

समझौता

पात्र परिचए- समझौता

पुरुष पात्र-

श्याम-	*(इंजीनियर)*
सुकान्त-	*(इंजीनियर)*
फुलेसर-	*(मध्यम किसान)*
कुसेसर-	*(बटेदार)*
मुनेसर-	*(बटेदार)*
रौदी-	*(बटेदार)*
अनुप-	*(बटेदार)*
झोली-	*(बटेदार)*

स्त्री पात्र-

रूपनी-	*(कुसेसरक पत्नी)*
रेखा-	*(श्यामक पत्नी)*

पहिल दृश्य-

(कुसेसरक आँगन)

रूपीनी- कोन लोभमे लटकल छी। गाममे देखै छी जे जेकरो ने किछु छेलै ओहो सभ पजेबाक घर बना लेलक। कल गड़ा लेलक। नीक-निकुत खाइए। चिक्कन-चिक्कन कपड़ा पहिरैए। अहाँ गाम-गामक रट लगौने छी।

कुसेसर- कहलौं तँ ठीके मुदा गामक लूरि छोड़ि लूरि कोन अछि जे शहर बजार जा करब। ने गाड़ी चलबैक लूरि अछि आ ने करखानाक काजक। तखनि जा कऽ की करब। खर्चा कऽ कऽ जाएब आ बूलि-टहैल कऽ चलि आएब। तखनि तँ आरो कर्जा लदा जाएत।

रूपनी- लूरि की कोनो लोक पेटेसँ सीख कऽ अबैए। काज करैत-करैत लूरि होइ छै। सुखदेवाकेँ कोन लूरि छेलै। ढहलेल-बकलेल जकाँ गाममे रहै छेलै। मति बदललै, ममियौत भाए सेने कलकत्ता गेल।

कुसेसर- सुनै छी जे आब कलकत्तामे नै रहैए। गाम ऐबो कएल तँ भेँटे ने भेल।

रूपनी- अहाँकेँ ने नै भेँट भेल। हम तँ भेँट केलिऐ। अँगनामे कुरसीपर चाह पिबैत रहए। जखने देखलक आकि कुरसीएपर चाहक कप रखि आबि कऽ दुनू हाथे पकड़ि दोसर कुरसीपर बैसैले कहलक।

कुसेसर- *(मुस्की दैत)* तब तँ अहाँ बड़का लोक भऽ गेलौं?

रूपनी- से की कुरसीपर बैसलौं। ओसारपर शतरंजी ओछाएल रहै ओइपर बैसलौं। मुदा धैनवाद ओकरा दुनू परानीक विचारकेँ दिऐ। अपने (हमरे) लगमे बैस चाहो-पीबै आ रूद्पुरवालीकेँ चाह-बिस्कुट नेने अबैले कहलक।

कुसेसर- की सभ गप भेल?

रूपनी- कोनो कि एक्केटा गप भेल। अपने खिस्सा सभ कहए लगल।

कुसेसर- अखनि केते कमाइए?

रूपनी- तेकर ठेकान छै। कहलक जे मालिक तेते बिसवास करैए। करखानाक मनेजरी दऽ देने अछि। ओइठीनक एक रूपैआ अपना सबहक सत्तरि रूपैआ होइ छै। मिहनतो करैए तँ सुखो होइ छै। अपना सभ जकाँ थोड़े अछि जे पेट साधि खटू आ सुखक बेरमे टुटरुमटुम।

कुसेसर- की करबै। ओकरा भागमे वएह लिखल छै अपना सबहक भागमे यएह लिखल अछि।

रूपनी- केकरो भाग-तकदीरमे किछु लिखल रहै छै। जँ से रहितै तँ धनक ढेरी रहै छै आ बेटा हेबे ने करै छै। जँ लिखल रहितै तँ सभ किछु ओकरे होइतै।

कुसेसर- तब की करब?

रूपनी- इंजीनियर (श्याम) साहैबकेँ समाद दऽ दियनु जे हम खेत-तेत नै करब। हुनकर कि कोनो खेत दहा जाइ छन्हि आकि रौदीमे जरि जाइ छन्हि। जजात जरैए आ दहाइए बटेदारक। ऋृण पैंच लऽ कऽ खेती करू आ उपजाक कोन बात जे लगतो चलि जाइए।

कुसेसर- कहलौं तँ ठीके मुदा...।

रूपनी- मुदा-तुदा किछो ने। नै समाद पठेबनि तँ नै पठबियनु। मुदा खेतक आड़िपर जाएब छोड़ि दियौ। जोत-कोड़ छोड़ि दियौ। जखनि गाम औता आ पुछता तँ कहि देबनि।

कुसेसर- आशा तँ वएह खेत अछि?

रूपनी- की अछि? ओते महगक खाद किनै छी, बीआ किनै छी, खटै छी। तैपर आधा बाँटि दइ छियनि। की लाभ होइए। दूध महक डारही होइए। खटनी कम लगै छै। ओते जे बोइनपर खटब तँ ओइसँ बेसी हएत।

कुसेसर- एकठाम दस सेर भऽ जाइए। बोइनो करब से सभ दिन काजो थोड़े लगैए?

रूपनी- अपनो काज ठाढ़ कऽ लेब। जइ दिन बोइन नै लागत तै दिन अपने काज करब।

कुसेसर- से केना हएत। जँ माले पोसब तँ सभ दिन ने ओकरा चरबए-बझबए पड़त। घास-भूसा करए पड़त। जइ दिन काज करए जाएब तै दिन अपन काज केना चलत।

रूपनी- तँ की गोला-बड़दक सेबनेसँ, जीब?

(मुनेसरक प्रवेश)

मुनेसर- कुसेसर, हौ कुसेसर।

कुसेसर- हँ, हँ भैया, अबै छी।

मुनेसर- सोहराइवाली किए रँगल छथुन्ह?

(कुसेसर छुप्पे रहैत)

रूपनी- भैया, हम की कोनो अधला बात बजै छी?

कुसेसर- हँ भैया, अपनो मोन कखनो-कखनो मानि लइए।

मुनेसर- से की?

कुसेसर- सोहराइए वालीक सुइत (हँसुली) बन्हकी लगा कऽ खेती केने छेलौं। देखिते छहक जे अपना बड़दो नै अछि। हरो जनेपर

	लइ छी। तैपर सँ खटवो करै छी आ पूजीओ लगैए। रौदी भऽ गेल। एक्को कनमाक आशा रहल।
रूपनी-	*(तरंगि कऽ)* हिनका जे कहबनि भैया से की हिनका नै होइ छन्हि। जेहने बटेदार हम तेहने तँ ईहो छथि।
मुनेसर-	कहलौं तँ एक-लाखक बात मुदा की उपए?
रूपनी-	छै उपए भैया?
मुनेसर-	की?
रूपनी-	इंजीनियर साहैबक खेत छियनि। दहाउ आकि रौदीयाउ हुनकर खेत थोड़े चलि जेतनि। मुदा हमरा सबहक तँ लगता चलि जाइए।
मुनेसर-	कनियाँ, दू सेरक अशो तँ अछि।
रूपनी-	एहेन आशाकेँ मुँह मारौथ। अना जे चुपेचाप खेत छोड़ि देथिन तँ दोखी हेता। हुनका गाम बजा कऽ सभ बात कहबनि। कहाँदन बड़का हाकिम छथिन। बुझता तँ बड़ बढ़ियाँ नै तँ हम सभ बिना पूजीए काहि काटब ओ अछैते पूजीए काहि कटता।
मुनेसर-	कुसेसर, कनियाँक विचार हमरो जँचैए। दुनू गोटे बुथपर चल। मिलिए कऽ कहबनि।

❍ ❍

दोसर दृश्य-

(श्याम इंजीनियरक डेरा)

श्याम- *(चाह पिबैत)* कल्हुके टिकट अछि। दस बजे गाड़ी अछि। तँए सभ किछु सम्हारि लिअ।

रेखा- *(तमसाइत)* की सम्हारब आ की नै सम्हारब। हजारो दिन कहलौं जे गामक खेत बेचि लिअ, तँ जी गारल अछि।

श्याम- कोनो कि खगैए जे बेचि कऽ गुजर करब। बाप-पुरखाक अरजल छियनि, जाधरि रहतनि ताधरि ने लोक नाम लेतनि जे फल्लांक छियनि। तेतबे नै, अपन लगिते की अछि मुदा साल भरिक बुतात (चाउर-दालि) तँ चलिते अछि।

रेखा- भरि दिन तँ हिसाबे जोड़ै छी कनी जोड़ि कऽ देखलिऐ जे केते पूजीसँ केते आमदनी होइए।

श्याम- सभठाम हिसाबे जोड़ने थोड़े काज होइए। इलाकाक-इलाकामे रौदी भऽ जाइ छै, दहार भऽ जाइ छै। अरबो-खरबोक पूजीसँ एक्को-पाइ आमदनी नै होइ छै, से लोक बरदास करिते छथि आ हम...।

रेखा- जिनका दोसर रस्ता नै छन्हि ओ कि करता। मुदा अपना तँ अछि।

श्याम- मिथिलाकेँ दुनियाँ देवलोक बुझैए। तैठाम हम छोड़ि कऽ पड़ा जाउँ।

रेखा- हमर बात कहिया सुनलौं जे आइ सुनब।

श्याम- कहिया नै सुनलौं?

रेखा- कहिया सुनलौं?

श्याम- जँ नै सुनलौं तँ आन दिन कहाँ कहियो ई बात कहलौं।

(सुकान्तक प्रवेश)

सुकान्त- भजार छी यौ?

श्याम- हँ, हँ भजार, आउ-आउ। बहुत दिन अहाँ जीब?

सुकान्त- विचारे कऽ रहल छेलौं जे अहाँसँ भेँट करी। काल्हि गाम जाएब।

श्याम- किए?

सुकान्त- बटेदार सभ अबैले कहलक अछि।

रेखा- कहै छियनि जे कोन लपौड़ीमे पड़ल छी। गामक सभ खेत बेचि कऽ अहीठाम मकान बना लिअ। पूजी ने पूजी बनबैए। जेते सम्पति गाममे अछि ओ जँ ऐठाम आनि चलाएब तँ ओहिसँ केते बर आमदनी हएत।

(रेखाक बात सुनि सुकान्त मुड़ी डोलबैत। मुदा किछु बजैत नै।)

श्याम- भजार, गुम्म किए छी?

सुकान्त- ई प्रश्न अपनो संग उठल अछि। मुदा...?

श्याम- मुदा की?

सुकान्त- जे बात कहि रहल छथि ओ अपनो छल। मुदा रूकि गेलौं।

श्याम- रूकि किए गेलौं?

सुकान्त ठीके कहब छै जे जेते लोक तेते विचार। मुदा नीक अधलाक विचार तँ करै पड़त।

श्याम- समाजक पढ़ल-लिखल (वुधिजीवी वर्ग) लोक तँ अपने सभ छी, अगर अपने सभ आँखि मूनि काज करब तँ जे कम पढ़ल-लिखल वा नै पढ़ल अछि ओ की करत? तँए ने अहाँसँ पुछैक प्रयोजन।

सुकान्त- की करब अहाँ से तँ हमरा कहने नै करब। मुदा अपन कएल काज कहै छी।

श्याम- हँ, सएह कहू।

सुकान्त- पत्नी लग बजलौं जे गामक खेत बेचि एतै आनि खेत कीनि घर बना भाड़ापर लगा देब। कोनो कारोबार जे करए जाएब से तँ नै भऽ सकैए। नोकरीओक ड्यूटी एहेन अछि जे चूर-चूर भऽ जाइ छी।

श्याम- की केलौं?

सुकान्त- पत्नी कहलनि जे खेत-पथार अहाँक किनल तँ नै छी तखनि बेचब किए। स्त्रीगणक सोभाब हम बुझै छी। अखनि भलहिं बेचि कऽ लऽ आनू मुदा जे स्त्रीगणक गाममे आब औती ओ की बजती?

रेखा- की बाजत? केकरो बजने की हेतै?

श्याम- की बजती?

सुकान्त- अपने नै बुझै छेलौं मदुा पत्नी कहलनि जे किछुए दिन पछाति घराड़ी घराड़ीए रहत से बात नै। बाड़ी-चौमास भऽ जाएत। जे किनत ओ भट्टा उपजौत की परती बनाएत तेकर कोनो ठीक छै।

श्याम- हँ, से तँ नहियेँ छै।

सुकान्त- केकरो कियो मुँहमे ताला लगौत। बाजत जे कुकर्मीक घराड़ी छिऐ तँए नढ़ीओ भुकै छै वा भट्टा उपजौल जाइ छै।

श्याम- *(नम्हर साँस छोड़ैत)* फेर की केलिऐ?

सुकान्त- मोन औना गेल। पुछलियनि तँ कहलनि जे पनरहो बीघा जमीन गौआँक बीच दऽ दियनु। ओ सभ अदलि-बदलि एकठाम कऽ हाइ स्कूल बना लेता। अहाँ तँ नोकरी करिते छी। जाधरि जीब ताधरि भार तँ सरकार नेनहि अछि।

श्याम- अहाँक काज हमरो जँचैए।

रेखा- कौआसँ खैर लुटाएब कोन कबिलती भेल?

सुकान्त- एक्के काजकेँ लोक, अपन-अपन विचारे केते रंगक बुझैए। अपन कएल काज कहलौं। अहाँकेँ मीठ लगए वा तीत ई तँ अहाँक जिह्वा कहत।

रेखा- जिह्वा तँ सबहक एक्के रंग होइ छै?

सुकान्त- देखैमे भलहिं एक रंग होइ मुदा सुआद फुट-फुट होइ छै। जँ से नै होइतै तँ सभकेँ सभ चीज एक्के रंग लगितै।

❍ ❍

तेसर दृश्य-

(गाम। कुसेसर, मुनेसर, फुलेदेब, श्याम आ तीन-चारिटा आरो बटेदार)

फुलेसर- श्याम भाय, गाममे हमरा सभकेँ जीब कठिन भऽ गेल अछि। हरीयरी अहाँ सभकेँ अछि।

श्याम- नोकरीमे की कोनो लज्जति रहल। समए छल जखनि लोक हकिमानी करै छल आ अपना जकाँ खाइ छल। आब तँ निच्चाँ-ऊपर मालिके-मालिक।

फुलेसर- *(हँसैत)* एहेन उटपटाँग बात किअए कहलौं?

श्याम- सिरिफ दरमाहापर आश्रित छी। ओना दरमेहे तेते अछि जे नै किछु बूझि पड़ैए। लोन लऽ कऽ घर बनेलौं।

फुलेसर- केते लोन अछि?

श्याम- पछिला मास सठि गेल। ऐल-फैल घर अछि चारिटा कोठरी भड़ो लगौने छी। जइसँ परिवारक खर्च निकलि जाइए।

फुलेसर- तब तँ दरमाहा बँचबे करत।

श्याम- हँ।

फुलेसर- भगवान करथि केतौ रही चैनसँ रही।

श्याम- बच्चा सभकेँ पढ़बैमे बड़ खर्च होइए।

फुलेसर- खर्च करै छी आकि अपन भार उतारै छी। आब गप आगू बढ़ाउ, कुसेसर।

कुसेसर- फुलेसर भाय, अहूँ किसान छी। दस बीघा खेत जोतै छी। खेतीक सभ भाँज बुझै छी। केते लगता खेतीमे लगै छै से अहाँसँ छिपल अछि।

फुलेसर- झाँपि-तोपि कऽ नै बाजू। खोलि कऽ साफ-साफ बाजू।

मुनेसर- फुलेसर बौआ, कुसेसर बजैमे धकाइए। हम कहै छी। इंजीनियर साहैब पाँचटा बटेदार छी। अखनि धरि आधा-अधी उपजा बँटैत एलियनि। मुदा बेर-बेर रौदी दाही होइए। हिनकर (श्यामक) तँ किछु नै, बिगड़ै छन्हि। उपजा नै होइ छन्हि। खेत तँ बँचले रहै छन्हि। मुदा हमरा सबहक तँ सभ किछु चलि जाइए।

श्याम- अहाँ सभ आधा बाँटि कऽ की हमरेटा दइ छी। आकि सभकेँ-सभ दइ छै। जे अदौसँ अछि।

फुलेसर- जे समए बीत गेल ओ तँ बीत गेल। पुन: घुरत नै। मुदा आँखिओ मुनि कऽ जीब उचित नै।

मुनेसर- ओते चिक्कारीमे गप करबाक कोन जरूरी अछि। सोझ-साझ बात सुनू। सभ दिनसँ बटाइ करैत एलौं। जे नीक की अधला भेल,

भेल। बिना कहने छोड़ि दैतयनि से नीक नै होइत तँए सोझहामे कहै छियनि जे हम सभ बटाइ नै करब।

फुलेसर- एना औगुता कऽ किए बजै छी। केना रोग दबाइ केने छुटैए। हँ, समाजमे ई रोग भारी अछि। भने सभ बैसले छी किए ने विचारि कऽ रस्ता निकालि लेब। गामक जमीन गामेक लोक उपजौत।

श्याम- फुलेसर, पत्नीक विचार छन्हि जे बेचि लिअ। मुदा एकटा दोस्त छथि ओ कहलनि जे अपन जमीन समाजकेँ सुमझा देलियनि। बातो सत्य जे जे गाममे रहता गाम हुनकर छियनि। तँए खेतीक बात बुझै नै छी अहाँ सभ उचित रस्ता निकालि कहू, मानि लेब।

फुलेसर- केते गोटे स्कूल बनबै छथि, केते गोटे अस्पताल। समाजमे एकरो जरूरति अछि। मुदा सभसँ प्रमुख जरूरी अछि जे गामक सम्पति (जमीन) केँ समुचित उपए कए उपजा बढ़ौल जाए।

श्याम- उपजा केना बढ़त?

फुलेसर- बारह मासक सालमे सिरिफ वर्षे मौसम एहेन अछि जे सालो भरिकेँ प्रभावित करैए। खूब बरखा भेल दहार भेल। नै बरखा भेल रौदी भेल। सालो भरि खेतिहर त्राहि-कृष्ण करैत रहऽ।

मुनेसर- फुलेसर बौआ, अहाँ देखिते छी जे दूटा हाथ-पएर छोड़ि किछु अछि नै। तँए की हमसब ऐ गामक नै कहाएब से बात तँ नै अछि। इंजीनियर साहैब, सभ तरहेँ सम्पन्न छथि मुदा छिआ तँ अही गामक। तँए...।

श्याम- तँए की?

फुलेसर- श्यामबाबू, अहाँ सिरिफ माटि बटेदारकेँ देने छिऐ। मुदा माटिसँ उपजा केना हएत? ऐ बातपर विचार करए पड़त।

श्याम- जहाँ धरि संभव हएत, करैले तैयार छी।

फुलेसर- बीस बीघा जमीन अछि। दूटा बोंरिंग आ एकटा दमकल कीनि बटेदारकेँ दए दियौ। जखनि पानि हाथमे आबि जाएत तखनि बाढ़ि-रौदीक संकट कमि जाएत। आठ मासक बिसवासू खेती आ चारि मास आधा भऽ जाएत। दहार नै रोकि सकब तँ रौदीसँ बचौल जा सकैए।

श्याम- बड़बढ़ियाँ।

बटेदार- एतबेटा सँ नै हएत। मोटा-मोटी यएह बुझू जे अहाँ सबहक (बटेदार सबहक) शरीर आ इंजीनियर साहैबक पूजी रहतनि। तँए आरो किछु पूजी लगबैक जरूरति छन्हि।

श्याम- से की?

फुलेसर- खेत जोतैले बड़द, नीक बीआ आ खादक ओरियान सेहो कऽ दियौ।

श्याम- बड़बढ़ियाँ। मुदा हमरा आपसी की हएत?

फुलेसर- खेतसँ लऽ कऽ दमकल-बोरिंग, बरद, खाद-बीआ लगा सभ पूजी भेल। बैंकक जे सूदि छै ओकरा धियानमे रखि आपसी हएत।

मुनेसर- की इंजीनियर साहैब, मंजूर अछि?

श्याम- अहाँ सभ कहू।

कुसेसर- ए-मस्त।

फुलेसर- जँ स्वीकार भेल तँ सभ थोपड़ी बजा...।

(सभ थोपड़ी बजा निर्णएकेँ स्वीकार केलनि।)

❍समाप्त❍

एकांकी

तामक तमघैल

पात्र परिचए...

पुरुष पात्र-

१.	रविन्द्र-	४५ बर्ख
२.	चन्द्रदेव-	४५ बर्ख
३.	सुनरलाल-	३५ बर्ख

स्त्रीपात्र-

१.	रागिनी-	६५ बर्ख
२.	बलाटवाली-	६० बर्ख
३.	पीपरावाली-	२५ बर्ख
४.	अनुराधा-	४५ बर्ख

पहिल दृश्य-

(जेठ मास। एगारह बजैत। जेठुआ दृश्य।)

पीपरावाली- *(माथपर छिट्टामे पुरना पार्ट-पुर्जा साइकिलक नेने)* लोहा-लक्कर बेचै जाइ- जाएब ई.. य..अ..अ..ऐ...?

(रागिनी आ बलाटवाली घरक ओसारपर बैसल गप-सप्प करैत। कवाड़िनक आवाज सुनि..)

रागिनी- कनी लोहा-लक्करवालीकेँ एम्हरे अबैले कहियौ।

(ओछाइनपर सँ उठि बलाटवाली आगू बढ़ि..)

बलाटवाली- हइ पीपरावाली, कनी एम्हरे आबह।

(माथपर छिट्टा नेने पच्चीस बर्खक पीपरावाली छपुआ साड़ी पहिरिने, पएरक चप्पल फटफटबैत अबैत.. ।)

पीपरावाली- काकी, कनी छिट्टा टेक देथु।

(दुनू गोटे छिट्टा उतारि निच्चाँमे रखैत। माथ परहक बीरबा निच्चाँ रखि आँचरसँ चानिपर चुबैत पसीना पोछैत। तैबीच रागिनी भीतरसँ -घरसँ- एकटा तामक तमघैल आनि आगूमे रखैत..)

रागिनी- कनियाँ, हमरा तँ बुझले ने छेलए जे तोहूँ लोहा-लक्करक कारोबार करै छह। नै ते...?

पीपरावाली- दादी, अपने करै छी आकि दीन करबैए?

रागिनी- सासु-ससुर आ घरबला नै छह?

पीपरावाली- सासु-ससुर तँ घिना कऽ मुइल जे घरोबला तेहने अछि।

रागिनी- से की?

पीपरावाली- की कहबनि। पतिक खिघांस केने तँ पाप लागत। मुदा छिपौनौं तँ जिनगीए जाएत।

(गुन-धुनमे पीपरावाली पड़ि जाइत..)

बलाटवाली- दीदी, अही वेचारीक की सुनथिन। अपने सबहक नै देखै छथिन। हिनके बेटा-पुतोहु छन्हि, दस-बारह बर्खसँ कम गाम एना भेल हेतनि।

रागिनी- बाहरम बर्ख छी।

बलाटवाली- हिनके की कहबनि, हमरे नै देखै छथिन जे जहियासँ घरबला मुइल तहियासँ दुनू-बेटा-पुतोहु कोनो गरनामे रहए देने अछि। तखनि तँ अपना लुरिए-बुधिए जीबै छी।

(रागिनी आ बलाटवालीक बात सुनि पीपरावाली..)

पीपरावाली- दादी, ई बड़का छथि। हम कहुना भेलौं तँ हिनकर धिए-पूते भेलियनि। धिया-पुता जे माए-बाप लग झुठ बाजे सेहो नीक नै।

बलाटवाली- माइए-बाप किए कहै छहक, लोककेँ झुठ बजबे नै करक चाही।

पीपरावाली- काकी, कहलथि तँ बेस बात, मुदा हम सभ तँ धंधा करै छी। झुठेक खेती छी। निच्चाँ-ऊपर सगतरि एक्के रंग।

रागिनी- बलाटवाली, जहिना अहाँ भरि दिन खुरपीसँ घास छिलै छी तहिना जे गपोकेँ छिलबै तँ उ घास जकाँ उखड़त की आरो असुआएल लोक जकाँ छिड़िया कऽ पसरि जाएत।

बलाटवाली- हँ, तँ आगू की कहए लगलहक हइ पीपरावाली?

पीपरावाली- घरबला दऽ कहए लगलियनि। की कहबनि काकी, बजैत लाज होइए। जहिना बुढ़बा -ससुर- तरिपीबा रहए तहिना बेटो छै? *(कहि चुप भऽ पुन: आँचरसँ चानि पोछए लगैत..)*

रागिनी- कमाइ-खटाइ नै छह?

पीपरावाली- से जे कमैते तँ अहिना रौदमे वौऐतौं। बापकेँ तँ खेत-पथार रहै बेचि-बिकिन कऽ पीलक। आब तँ ने खेत पथार अछि आ ने कमाइबला।

रागिनी- बच्चा कएटा छह?

पीपरावाली- दू भाए-बहिन अछि। जेठका छह बर्खक आ छोटकी चारि बर्खक।

रागिनी- अपने जे भौरी करए चलि जाइ छह तँ बेटा-बेटीकेँ बाप देखै छै किने?

पीपरावाली- की देखितै जनिपिट्टा। भरि दिन पीब कऽ अड़-दड़ बजैत रहैए। जहाँ किछ बाजब की सोहाइ लाठी लगा दइए।

बलाटवाली- तोहूँ किए ने उनटा दइ छहक?

पीपरावाली- धुर काकी, ईहो सएह कहै छथि। कुल-खनदान की पुरखेटा बँचबैए आकि जनीजातीओ। हमरा जे केतबो देह धुनत तँ ओकरा दोख नै लगतै मुदा हम जे उनटा देबै तँ कुल-खनदानक नाक कटतै आकि नै?

रागिनी- भरि दिनमे केते कमा लइ छहक?

पीपरावाली- दादी, कमाइएपर ने ठाढ़ छी। दुनू बच्चोकेँ पोसै-पालै छी आ घरोबलाकेँ पाँच-दस रूपैआ पीऐ लऽ देबे करै छिऐ ने?

बलाटवाली- एहेन छुतहर घरबला छह तँ किए ने छोड़ि दइ छहक?

पीपरावाली- काकी, मरलो-जड़ल अछि तँ घरेबला छी। यएह कहथु जे जे सुख घरबलासँ होइ छै से दोसरसँ हएत।

रागिनी- आब तँ हुसि गेलह। नै जे पहिने बुझल रहितए जे गाममे तोहूँ लोहा-लक्करक कारवार करै छह तँ तोरे दैतिअ।

पीपरावाली- केकरा हाथे बेचलखिन?

रागिनी- झंझारपुरक एकटा वेपारी अबैए, ओकरे हाथे।

पीपरावाली- झंझारपुरबला वेपारी तँ गरदनि कट सभ छी।

रागिनी- से की?

पीपरावाली- अनकर की कहबनि, अपने कहै छियनि। आठ बर्ख पहिने हमर बाप खुआ चानीक हँसुली दुरागमनमे देलक। ऐठाम दिन घटल। पाँच बर्ख पछाति जखनि वएह हँसुली ओही वनीमा ऐठाम बेचए गेलौं तँ रूपा कहि अधिए दाम देलक।

रागिनी- छोड़ह दुनियाँ-जहानक गप। अपन बाल-बच्चा, घर-परिवारक गप करह, जे केना ठाढ़ रहत? केकरा कहब भल आ केकरा कहब कुभल। कोइ अपना ले करैए।

बलाटवाली- कनियाँ, नैहरोमे यहए काज करै छेलह?

पीपरावाली- *(दुनू आँखि मीड़ैत..)* काकी, हिनकर पएर छूबि कहै छियनि, कहुना भेली तँ माइए-पितिआइन भेली। गाम मोन पड़ैए ते...?

बलाटवाली- चुप किए भेलह? ऐठाम की कियो पुरुख-पातर अछि जे धखाइ छह। नैहरामे के ने खेलाइ-धुपाइए।

पीपरावाली- धुर बुढ़िया नहितन। एक्को-पाइ बजैमे संकोच नै होइ छन्हि।

रागिनी- ओहिना बलाटवाली चौल करै छह। बाजह...?

पीपरावाली- दादी, नैहर मोन पड़ैए तँ सुमारक होइए। माए-बापक बड़ दुलारू छेलिऐ। चारि भाँइक बीच असगरे बहिन छिऐ।

रागिनी- बिआह करै काल बाप देखा-सुनी नै केने छेलखुन?

पीपरावाली- अनकर दोख की देबै दादी। दोख अपन कपारक। जे कपारमे सटि गेल सहए ने हएत।

रागिनी- हँ, से तँ सएह होइ छै। मुदा तैयो तँ लोक लड़का-लड़कीक मिलान देखि ने बिआह करैए।

पीपरावाली- सोझमतिया बाप ठकहरबा सबहक भाँजमे पड़ि गेल।

रागिनी- ऐठामसँ आरो आगू जेबहक की घुरि जेबहक?

पीपरावाली- भऽ गेल भरि दिनक कमाइ। बालो-बच्चा देखना बड़ी खान भऽ गेल आ रौदो चंडाल अछि।

(तमघैल उनटा-पुनटा कऽ देखि बलाटवाली..)

बलाटवाली- आब ऐ सबहक कोनो मोल रहल दीदी। घरमे अन्न रहत तँ लोक माटिओ बरतनमे रान्हि-पका खा सकैए।

रागिनी- बड़ी खान तोरो भऽ गेलह कनियाँ। एक्केठाम बैसने काज नै चलतह। बाजह, केते दाम देबहक?

पीपरावाली- दादी, हिनका लग झुठ नै बाजब। एक तँ केते दिनसँ कारेवार करै छी। तहूमे एहेन तमघैल आइ पहिले दिन अभरल हेन। आइ रखि लथु। भाओ बूझि कऽ दोसर दिन लऽ जाएब।

रागिनी- एकरा नेने जाह। जेतेमे बिकेतह तइमे तूँ अपन बोइन निकालि दऽ दिहऽ ।

बलाटवाली- बड़ निम्मन चीज छन्हि।

रागिनी- जहिना सासु-ससुरक बीचक जिनगी, बेटा-पुतोहुक बीच बदलि जाइ छै तहिना अहू तमघैलकेँ भेल।

पीपरावाली- से की दादी, से की?

रागिनी- *(विस्मित होइत..)* की कहबह! नैहरमे जहिया देलक आ ऐठाम आएल तहिया घरक गिरथानि भऽ रूपैआ-पैसा रखैक तिजोरी बनल रहए। मुदा जखनि चोर-चहारक उपद्रव बढ़ल तखनि बुढ़हा -ससुर- झँपना दऽ ओछाइनिक तरमे गाड़ि कऽ रखै छला। आब तँ सहजे घरे ढनमना गेल तँ एकरा के पूछत।

बलाटवाली- कनियाँ, दीदीओकेँ खगता छन्हि। ताबे नून-तेल करैले अधो-छिधो दऽ दहुन आ लऽ जाह।

पीपरावाली- *(पचास रूपैआक नोट दैत..)* दादी, ताबे एते रहए देथुन। एक खेप गामपर सँ रखने अबै छी। एक घोंट पानिओ पीब लेब।

बलाटवाली- अखनि खाइ-पिबै बेर भऽ गेल। जँ अखनि नहियोँ आबि हेतह तँ ओही बेरमे, बेरू पहर लऽ जइहऽ ।

पीपरावाली- हँ सेहो हएत। जँ आइ नै आबि हएत तँ काल्हिओ लऽ जाएब।

रागिनी- आब तोहर चीज भेलह। देखिते छहक चोर-चहारक उपद्रव। तँए नीक हेतह जे साँझो पड़ैत आइए लऽ जइहऽ।

पीपरावाली- बड़ बढ़ियाँ!

❍ ❍

दोसर दृश्य-

(खैर-चून मिला, रागिनी अल्मुनियम डेकचीक पेनमे लगबैत..)

रागिनी- कपार फुटने लोकक सभ किछु फुटए लगै छै आ जुटने सभ किछु जुटए लगै छै। जखनि नूनो-तेल जोड़ैमे भीड़ पड़ैए तखनि डेकची किनब असान अछि। केते दिन चून-खैर साटि काज चलत। जखनि फुटि गेल तखनि आरो बेसीए होइत जाएत की दढ़ हएत।

(बाड़ीए देने झटकल बलाटवाली अबैत...)

रागिनी- किए सिताएल नढ़िया जकाँ बाड़ीए-बाड़ी पड़ाएल एलह हेन?

बलाटवाली- *(हँफैत)* की कहबनि दीदी, ई की कोनो नै जनै छथिन जे जेहने बेटा अछि तेहने पुतोहु। बीचमे हम दुश्मन।

रागिनी- की करबहक, जखनि बेटे माएकेँ नै चिन्हलक, जेकरा नअ मास पेटमे रखलक तखनि पुतोहु तँ सहजे दोसराक बेटी छी।

बलाटवाली- कहै तँ दीदी ठीके छथिन, मुदा इएह कहथु जे ओइ घर-दुआरमे हमर किछो ने अछि। हम केतौसँ दहा-भसा कऽ आएल छी।

रागिनी- से के कहै छह! लोकक मतिए मरा गेल अछि। जे माए-बाप दादा-दादी एतेटा जिनगी बिता एते देखलक ओ किछु ने आ छौड़ा-छौड़ी किछु ने देखलक ओ बुद्धियार भऽ गेल अछि। से नै देखै छहक।

बलाटवाली- हँ, से तँ देखै छिऐ। सभ कहैए जे जुग-जमाना बदलि गेल आ बदलल किच्छो देखबे ने करै छिऐ तँ केना बिसवास हएत।

रागिनी- जहिना दिशांस लगने लोक पूबकेँ पछिम आ उत्तरकेँ दछिन बुझए लगैए तहिना भऽ गेल अछि।

बलाटवाली- नै बुझलियनि?

रागिनी- जुग-जमाना बदलल नै आगू डेग बढ़ौलक हेन। बदलैक माने होइ छै एकटाकेँ हटा दोसर आनब। से नै भेल हेन। जँ से होइते तँ देखतहक सभ किछु आगिमे जड़ि गेल आकि बाढ़िमे दहा गेल आ फेरसँ सभ किछु नवका भऽ गेल।

बलाटवाली- छोड़थु ऐ मगजमारी गपकेँ। अपन बात बिसरि जाएब। अनकर गप सुनने मगज भरिएबे करै छै। जाबे अपन बात नै बुझब ताबे माथ हल्लुक केना हएत?

रागिनी- की भेलह हेन जे एते...?

बलाटवाली- की कहबनि खेलरा-खेलरीक गप, दुनू एक्के रंग अछि। एते दिन मौगीक गप नीक लगै छेलै, आब जे हुकुम चलबए लगलै तँ बकछुहुल लगै छै।

रागिनी- तूँ तँ केहेन बढ़ियाँ जीबै छह। दुनू पहर दू पथिया घास अनै छह आ दुनू साँझ खाइ छह। बेटा-पुतोहु जे घर दफानिए लेलकह तँ आरो जान हल्लुके केलकह किने?

बलाटवाली- हँ, से तँ भेल। मुदा से देखल जाइए। जेते काल बाधमे रहै छी तेतबे काल ने, जखनि अँगनामे रहै छी तखनि केना देखल जाएत।

(तही बीच सुनरलाल ललकैत अबैए..)

सुनरलाल- दादी, ऐ बुढ़ियाकेँ पुछियौ जे किए छिटकल घुरैए।

बलाटवाली- दीदी, ऐ छौड़बाकेँ पुछथुन जे हमरा माए बुझैए। तखनि तँ अपन बनौल घर छी, लछमीक *(गाए)* सेवा करै छी वएह पार लगौती।

सुनरलाल- हम तोरा माए नै बुझलियौ आकि अपने पुतोहुकेँ कपारपर चढ़ा लेलेँ। जे तोरा कपारपर चढलौ ओ कुदि कऽ हमरा कपारपर नै चढ़ि जाएत।

बलाटवाली- हँ रौ, चारू कातसँ हारलेँ हेँ तखनि तूँ हमरा बुझबै छेँ। आइ तक एक्को दिन भेलौ जे माएकेँ कोनो तीरथ करा दिऐ। ई तँ धैन दीदी जे लाटमे जनकोपुर, सिंहेसरो आ कुशेसरो देखलौँ।

रागिनी- *(बलाटवालीकेँ चोहटैत)* तोहूँ बड़े बजै छह, अखनि तक अपन उमेरोक ठेकान नै छह। किए बुढ़ियापर बिगड़ल छहक बौआ?

सुनरलाल- माएपर किए बिगड़ब। देखियौ जे हाथपर ओते पाइ नइए जे पनरहम दिन बेटाक नाओं कोचिंगमे लिखाएब तैपरसँ कन्यादानी नोत सासुरसँ चलि आएल हेन?

बलाटवाली- दीदी, बात छिपा कऽ बजै छन्हि। ई दुनूटा चाहैए जे गाए बेचि भोज खा आबी।

रागिनी- कनी फरिछा कऽ कहऽ?

बलाटवाली- ऐ धड़कटहाकेँ पुछथुन जे मात्रिक उसरि गेल आकि अछि। इज्जत बँचबै दुआरे भातिज सभकेँ कहि देलिऐ जे बौआ, आब ओते चलि-फिर नै होइए जे आएब-जाएब करब। ओहो सभ परदेशीया, गाम अबैए तँ दस-बीस रूपैइयौ आ लत्तो-कपड़ा दऽ जाइए। एकरा पुछथुन जे एक बीत नुओ कीनि कऽ दइए।

रागिनी- तोहूँ बड़ रगड़ी छह बलाटवाली। कनी फरिछा कऽ कहऽ बौआ?

सुनरलाल- दादी, ननौरवालीक बहिन बेटीक बेटीकेँ बिआह छी। सभटा परदेशीया भऽ गेल। नवका-नवका विधि बेवहार सभ करैए। पुरना गामक लोक लए छोड़ि देने अछि। रमेशक सभ संगी झंझारपुर कोचिंगमे नाओं लिखौत, ओकरा हम नै लिखेबै से केहेन हएत?

रागिनी- ऐ काजमे के मुहछी मारतह। भगवान करथुन चारिओ अक्षर जे पढ़ि लेतह ओते नीके हेतह किने। अहुना लोक बजैए जे पढ़ल-

लिखल हरो जोतत तँ सिरौर सोझ हेतै। कनियाँक की विचार छन्हि?

सुनरलाल- ओ कहैए जे सबहक ठाठ-बाठ बजरूआ रहतै तैठीन जे हम जाएब से केना जाएब। हमरा देखि ओ सभ हँसत नै।

रागिनी- बौआ, जाबे असथिर मोनसँ घरक नीक-अधला नै बुझबहक ताबे अहिना हेतह। तोरा जे कहबह से अपने नै देखै छह। बेटा-पुतोहु शहरमे खेत किनलक हेन। घर बनौत। आ हम ऐठाम नून-तेल ले मरै छी।

सुनरलाल- अखनो जे एक रती चुहचुही अछि से अही बुढ़ियापर। खेत-पथारक कोनो लज्जति अछि। गोटे बेर बाढ़िए चलि अबैए तँ गोटे बेर रौदीए भऽ जाइए। गोटे साल हबे तेहेन बहैए जे दने भौर भऽ जाइ छै। किड़ी-फतीगिंक चरचे कोन।

रागिनी- बौआ, घरक पुरुख तँ तोंही ने छहक? तोंही ने गारजन भेलहक?

सुनरलाल- हँ, से तँ छिऐ मुदा कियो मोजर देत तखनि ने। ई बुढ़िया अखनो बेदरे बुझैए तँ घरवाली की बूझत?

बलाटवाली- थुक देथुन एहेन छौंड़बाकेँ?

रागिनी- दुनियाँमे माइयक सेवा बेटा लेल ओहन होइत जेकर जोड़ा नै छै। तखनि रंग-बिरंगक माए-बाप, बेटा-बेटी भऽ गेल अछि। तँए दुनियाँ दिस नै देखि अपन ऐनामे माएकेँ देखि हृदैमे समुचित जगह देबाक चाही।

बलाटवाली- दीदी, पैघ फड़क पैघ लत्ती होइ छै, मुदा छोटक तँ छोटे होइ छै।

रागिनी- हँ से तँ होइ छै। अच्छा बौआ, एते दूरक लत्ती केना पकड़ि लेलकह। नैहर-सासुर धरिक लत्ती तँ ठीक छै मुदा नोनी साग जकाँ केना एते चतरि गेलह।

सुनरलाल- दादी, की कहब। ई सार मोबाइल जे ने करए। मोबाइलेपर नोत-पिहान, ए.टी.एम.सँ लेन-देन तेहेन रस्ता धड़ा देलक हेन जे फुदीओसँ बेसी लोक उड़ए लगल हेन।

रागिनी- बौआ, अनकर की कहबह, अपना पोताकेँ दस बर्ख भऽ गेल अछि, अखनि तक एक नैन देखलौं तक नै। तखनि तँ छातीमे मुक्का मारनहि छी जे जखनि बेटे नै तखनि पुतोहुए आ पोते-पोती केतए।

सुनरलाल- तखनि की करी दादी?

रागिनी- बौआ, किछु जे धाँइ दऽ कहि देबह से नीक नै हएत। किए तँ घरमे *(परिवारमे केते)* केते रंगक लोक रहैए। अपना रंगे सभ

देखै छै। तँए एक्के बात एकर्कें नीक लगै छै दोसरकेँ अधला। जेकरा अधला लगतै ओ तँ अधले कहत।

सुनरलाल- दादी, अहाँक बात माएओ मानैए। अहाँ जे कहब सएह करब।

रागिनी- बौआ, देखहक जखने कमाएत कोइ आ खर्च करत कोइ तखने किछु-ने-किछु गड़बड़ हेबे करत।

सुनरलाल- तखनि?

रागिनी- यएह जे परिवारकेँ सभ संस्था बूझि इमनदारीसँ जीबए।

सुनरलाल- ननौरवाली केना सुढ़ियाएत?

रागिनी- बौआ, बेटा तोरे नै ननौरोवालीक छिऐ। स्कूलमे की खर्च होइ छै से तँ तूँ बुझै छहक। मुदा माए नै बुझै छै। तँए कहक जे रमेशक नाओं स्कूल जा लिखा दियौ।

बलाटवाली- बेस कहलिऐ दीदी। बैसल-बैसल देह पोसैए आ बात गढ़ैए। भने कहलिऐ?

सुनरलाल- कहने थोड़े चलि जाएत। कहत जे बुझले ने अछि बौआ जाएब।

रागिनी- *(मुस्कीआइत)* बौआ, यएह बात सभकेँ बुझए पड़तै। सोझहे कौआ जकाँ अकासमे कुचड़ने नै ने हेतै।

बलाटवाली- दीदी कहथुन ने, जे हाटपर दू सेर सीम भट्टा किनत तँ संगे दुनू गोरे जाएत। आ स्कूलमे जा कऽ नाओं लिखा देतै, से नै हेतै। तैकाल पाग उतरि जेतै।

रागिनी- बेस तँ कहलहक।

❍ ❍

तेसर दृश्य-

(डेराक बरामदा। चारि कुरसी एक टेबुल। टेबुलक एक भाग रविन्द्र आ दोसर भाग अनुराधा बैसल..)

रविन्द्र- की समए आ की सपना छल। आइ की देखि रहल छी।

अनुराधा- जेना बूझि पड़ैए जे कौलेजक ओ दिन मोन पड़ि रहल जइ दिन अहिना कौमन रूममे बैस गप-सप्प करैत रहै छेलौं।

रविन्द्र- हँ, सपना तँ साकार भेल जे जहिना अहाँ देखि संगी बनेबाक इच्छा भेल। मुदा एकटा कहू जे ओइ समए अहाँ की सोचैत रही। जे कौलेजसँ निकलला बाद की करब?

अनुराधा- *(विस्मित होइत)* सभ कर्मक खेल छी। जा धरि संगीक बंधनमे नै बान्हल गेल छेलौं ताधरि एकटा झिझरीदार परदा बीचमे छल, जे आब नइए।

रविन्द्र- की मतलब?

अनुराधा- मतलब यएह जे सृष्टिक एक कर्ता रूपमे अपनाकेँ पाबि रहल छी। मुदा...?

रविन्द्र- मुदा की?

अनुराधा- अपन प्रवल इच्छा रहए जे प्रोफेसर बनि बाल-बोधकेँ बाट देखाएब मुदा आइ बूझि पड़ैए जे अपनो बाट अन्हराएले जा रहल अछि।

रविन्द्र- से की?

अनुराधा- यएह जे एम.ए.क डिग्री बेकार लेलौं। की जिनगी अछि? यएह ने जे भानस करै छी अपनो खाइ छी आ अहूँ सभकेँ खुआबै छी।

रविन्द्र- *(मुस्की दैत)* एकरा कम बुझै छिऐ?

अनुराधा- कम तँ नै छिऐ मुदा जेकरा मौनसूनक बोध नै रहत ओ जँ हथिया नक्षत्रक बर्खा देखत, से केते काल?

रविन्द्र- गप-सप्पक ओझरी की तिआरि जालसँ कम होइए। एकबेर ओझराएत तँ ओकरा फेकै पड़त। अच्छा, ओइ सभ गपकेँ छोड़ू अखुनका गप करू।

अनुराधा- जखनि अपन जमीन भऽ गेल तखनि अनेरे आठ हजार भाड़ाबलाकेँ किए दइ छिऐ?

रविन्द्र- भरिसक जमीन बेचए पड़त। घर नै बना पाएब।

अनुराधा- एना निराश किए भेल जाइ छी?

रविन्द्र- निराश केना नै हएब! ने कोनो बैंकक नोकरी करै छी जे दरमहो बेसी आ कमीशनो भेटत आ ने प्रशासनिक सेवामे छी जैठाम 'राम-नाम'क लूट भऽ रहल अछि।

अनुराधा- (मुड़ी डोलबैत) हँ से तँ बान्हल दरमाहा अछि। एकटा करू, किछु ट्यूशने करू आकि कोनो कोचिंगे पकड़ि लिअ।

रविन्द्र- ई ने तँ बुझै छिऐ जे बर-पीपरक गाछ जकाँ मनुक्खो अछि, चालिस टपि गेलौं। अखनि तँ चश्मे टाक जरूरति भेल हेन, आगू तँ बाँकीए अछि।

अनुराधा- तखनि?

रविन्द्र- तखनि की अहू तँ संगे पढ़ने छी। संगीए छी तखनि आइ किए पुछै छी।

अनुराधा- पुछब बड़ अधला भेलै। ऐ घरक चिन्ता अपने नै करब तँ कियो आन आबि कऽ देत।

रविन्द्र- से तँ नै करत मुदा एकटा बात कहूँ जे जइ दिन दरमाहा उन-सँ-दून भेल आ तइसँ दुनू गोटेक मोन खुशी भेल। जइ खुशीमे बजारसँ सजा कऽ अनने रही। तइ दिन आमदनी तँ देखलिऐ मुदा खरचा देखिलिऐ। छह महिनासँ घरक भाड़ा विवादमे पड़ल अछि। ओ आठ हजारसँ दस हजार कऽ देलक। बेसी बात नै करब, एक्केटा बात कहू जे मोबाइलेमे केते महिना उठैए।

अनुराधा- *(गुम्म भऽ उपरो-निच्चाँ देखैत आ मुड़ीओ डोलबैत..)* मुड़ीओ डोलबैत।

रविन्द्र- गुम्म किए छी। समाजक पढ़ल-लिखल लोक तँ अपने सभ छिऐ।

अनुराधा- हँ, से तँ देखै छी रंग-बिरंगक खरचा बढ़ि गेल हेन। एते दिन किताबो-पत्रिका पढ़ि-पढ़ि समए बितबै छेलौं आब जे टी.बी. अछि तँ बिजलीक लाइने ने रहै छै।

रविन्द्र- अपनो मोन जेना किताब दिससँ उचटले जाइए। एते दिन इच्छा रहै छेलए जे किछु नव चीज पढ़ि विद्यार्थीकेँ पढ़ाबी मुदा आब तँ रटले साँक मंत्र जकाँ, बकि दइ छिऐ।

अनुराधा- *(रिंग सुनि मोबाइल उठा)* हेलो?

चन्द्रदेव- हँ, हँ मुम्बईसँ चन्द्रदेव बाजि रहल छी।

अनुराधा- *(सुखल हँसी हँसि..)* आहा हा, चन्द्रदेवबाबू?

चन्द्रदेव- हँ, हँ अनुराधा जी?

अनुराधा- हँ, हँ, हँ।

चन्द्रदेव- अहींक शहर आबि गेल छी। एक घंटाक समय खाली अछि तँए सोचलौं जे मिलि-जुलि ली। पान-सात मिनटमे डेरा पहुँच रहल छी।

अनुराधा- अबस्स-अबस्स अबिऐ। दोसो डेरेपर छथि।

चन्द्रदेव- गाड़ीमे मोबाइल गड़बड़ाइए। आगूक गप डेरेपर हेतै।

रविन्द्र- चन्द्रदेव सेठ भऽ गेल। पँच-पँचटा नोकर। अपन तीन-तीनटा गाड़ी।

अनुराधा- जेकर भाग चमकै छै तेकरा अहिना होइ छै।

रविन्द्र- कहलिऐ तँ बेस बात मुदा ई बुझे छिऐ जे एक्के कौलेजसँ निकलल एक गोटे लाखक कमाइ करैए आ एक गोरे पाँच हजारपर शिक्षा मित्र अछि।

अनुराधा- हँ, से तँ अछि।

(नव मोडलक पोशाकमे चन्द्रदेवक प्रवेश..)

रविन्द्र- *(दुनू हाथे बाँहि पकड़ि छाती मिलबैत..)* भाय, भाय, अहाँ तँ बड़का लोक भऽ गेलौं।

चन्द्रदेव- नै-नै भाय, मनुख केतौ रहए मुदा हृदए तँ वएह रहै छै। की अनुराधा जी।

अनुराधा- *(सरमाइत)* चन्द्रदेवबाबू केतए आ अनुराधा केतए। आब ओ सभ पछिला गप स्मृति बनि किछु मनो अछि आ बेसी बिसरिए गेलौं।

चन्द्रदेव- मुनेसरक दोकानक छोला आ कपरकट्टा दोकानक गुप-चुप।

अनुराधा- जइ दिनक जे भोग-पारस छल भेल। आइ जे अछि से भऽ रहल अछि।

चन्द्रदेव- भाय, अपन घर छिअ आकि भाड़ाबला?

रविन्द्र- *(मलिन होइत..)* भाय, एते दिन अशो छल मुदा...?

चन्द्रदेव- मुदा की?

रविन्द्र- अर्थक जालमे ओझरा गेल छी। गुण अछि जे बेसी धिया-पुता नै अछि।

चन्द्रदेव- परिवार नियोजन करा लेलह?

रविन्द्र- हँ, मुदा दुइओटा कँ पार लागब कठिन बूझि पड़ि रहल अछि।

चन्द्रदेव- भाय, जेते भारी जिनगीकँ बुझै छहक ओते भारी कहाँ अछि। अपनासँ बेसी वाइफ कमाइए।

अनुराधा- ओहो नोकरी करै छथि?

चन्द्रदेव- नै। लाइसेंस करा कऽ अपन एकटा ब्रांच खोलने छी। पचाससँ ऊपरे एजेंट काज कऽ रहल अछि।

अनुराधा- पैघ लोकक पैघ बात।

रविन्द्र- हमरो कोनो विचार दाए तँ...?

चन्द्रदेव- गाममे की कम सम्पति छह। बेचि कऽ लऽ आनह। कहबे केलह जे दू कट्टा जमीन किनने छी। निच्चाँ-ऊपर मकान बना लैह। तेते भाड़ा हेतह जे घरक काज अनेरे हराएल रहतह।

रविन्द्र- भाय, तेना ने तोरा देखि हेरा गेलौं जे चाहो-पान पछुआ गेल।

(अनुराधा भीतर जाइत..)

चन्द्रदेव- जखनिसँ गाड़ीसँ उतरलौं तखनिसँ बूझि पड़ैए जे गरमे देह झड़कैए।

रविन्द्र- की कहबह ऐठामक पानि-बिजलीबला सबहक किरदानी।

चन्द्रदेव- से की?

रविन्द्र- देखिते छहक जे एते गरमी अछि बिजलीक केतौ पता नै।

(पानि-चाह आनि अनुराधा टेबुलपर रखैत। तीनू गोटे तीनू दिस बैस, पानि पीब चाह पिबैत..)

अनुराधा- चन्द्रदेवबाबू, केते दिनसँ अपनो मोनमे नचै छेलए जे गामक खेत-पथार बेच, एतै बेवस्था कऽ ली मुदा अपने दुविधामे पड़ल छथि।

चन्द्रदेव- से की?

रविन्द्र- माए गाममे अछि। जँ हम बेचए चाहब आ ओ नै बेचए दिअए तखनि की करब। माए बेटामे झगड़ा करब?

अनुराधा- हक-हिस्सा ले तँ लोक बापोसँ झगड़ा करैए आ अहाँ माइएक गप करै छी।

रविन्द्र- बापसँ झगड़ा करब नीक मुदा माएसँ...?

❍ ❍

चारिम दृश्य-

(रागिनीक पुरान घर। बरसातक झमारल..)

रविन्द्र- माए, छुट्टी नइए। बरह-बजिया गाड़ीसँ चलि जाएब।

रागिनी- एते औगताएल किए छह। एते दिनपर एलह, तखनि एते किए औगताएल छह। कम-सँ-कम, जहिना कोटमे जेते मासक एस्काउन्ट रहल तेते दिन कस्टडीमे रखि जमानत भऽ जाइ छै तहिना कम-सँ-कम, दसो दिन तँ रहऽ।

रविन्द्र- अखनि बहुत कड़ाइ कौलेजमे चलि रहल अछि। एते दिन तँ नहियोँ गेने काज चलि जाइ छेलए। आब तँ विद्यार्थी आबह कि नै आबह मुदा प्रोफेसरकेँ जाएब अनिवार्य भऽ गेल अछि।

रागिनी- माल-जालकेँ लोक बान्हि कऽ रखैए, मनुखकेँ कियो थोड़े बान्हि कऽ रखि सकैए।

अनुराधा- माए, हमसब किम्हर एलियनि से तँ पुछबे ने केलथि?

रागिनी- अपनो घरमे लोककेँ एहन बात पुछल जाइ छै जे तोरा सभकेँ पुछबह।

अनुराधा- काजे आएल छी।

रागिनी- केहेन काज, बाजह?

अनुराधा- से तँ बेटा सोझहेमे छन्हि, पूछि लेथुन।

रागिनी- से की बौआ नै सुनैए जे पुछबै। बाजत तँ वएह ने। बिना बजने थोड़े बुझब।

रविन्द्र- माए, पाँच बर्ख जमीन किनना भऽ गेल। सोचने रही जे ऐ साल जमीन कीनि लइ छी आ अगिला साल घर बना लेब। से गरेपर ने चढ़ैए।

रागिनी- से तँ अपने बुझबहक? जे की सोचलौं आ की होइए। हम स्त्रीगण जाति की बुझबै जे घर केना बनौल जाइए। ईहो (अपन घर देखबैत..) तँ अपने (पति) बनौल छियनि जे कष्टो काटि कऽ आसरा अछि।

रविन्द्र- माए, जहिना अरामसँ कमाइ छी तहिना अरामे सँ खरचो भऽ जाइए।

रागिनी- से की?

रविन्द्र- कोनो की एक रंगक खर्च अछि। जहिना उन-सँ-दून दरमाहा बढ़ल तहिना ने खरचो उन-सँ-दुन भऽ गेल अछि। केतबो बचा कऽ रखए चाही छी, कहाँ बँचि पबैए।

रागिनी- खैर, छोड़ह ऐ सभ गपकेँ। की कहलह जे काजे...?

रविन्द्र- दुनू प्राणी विचारलौं हेन जे गामक चीज-बौस बेचि कऽ घर बना लेब। अनेरे जे एते भाड़ा भरै छी से तँ नै भरए पड़त।

रागिनी- ऐठामक जे चीज-बौस बेचि लेबह तँ हम केतए रहब?

अनुराधा- किए, हिनका रहैले घर नै छन्हि। बेटा कियो वीरान छियनि।

रागिनी- से के वीरान कहत। मुदा...?

अनुराधा- मुदा की?

रागिनी- मनुख दू जिनगी जीबैए। एक बेटा-बेटीक दोसर माए-बापक। जाबे सासु-ससुर जीबै छला, ताबे बेटी जकाँ रहलौं। मुदा ई तँ दुनियाँक खेले छी जे सभ सभ दिन नै रहत। जहाँ धरि बनि पड़ल तहाँ धरि एक्को दिन सासुक मुहेँ अवाच् कथा नै सुनलौं।

अनुराधा- की कहै छथिन से नै बूझि रहलयनि हेन?

रागिनी- अमरूख लोकक बात जे पढ़ल-लिखल बुझैत तँ अहिना दुनियाँ रहैत। छातीपर हाथ रखि बाजह जे दस-बारह बरिससँ एक्को-पाइ नूनो-तेल ले देलह?

अनुराधा- ई दोख हिनकेटा मे नै, हिनका सन-सन सभ सासुमे आबि गेल हेन।

रागिनी- ऐमे तोहर दोख नै छह, दोख छै जुग-जमानाक विचारकेँ। जेहेन जुग हएत तेहने ने विचारो हएत आकि जेहने विचार हएत तेहने ने जुगो हएत। परोछा-परोछी नै बजै छी, सोझमे कहलिअ हेन। धरमागती बाजह।

(तत्-मत् करैत अनुराधाकेँ देखि..)

रविन्द्र- माए, तोहर बात कटैबला नै अछि। तखनि मोनमे यएह रहल जे सभ किछु तँ अछिए तखनि जरूरते की पड़तै।

रागिनी- तूँ पुरुख जाति किआँने गेलहक माइयक छातीकेँ, जे बच्चाकेँ छातीक दूध पिआ ठाढ़ करै छै ओकरा आगूसँ जँ बच्चा हटा लेल जाए तँ ओइ माइक दशा की हएत?

रविन्द्र- *(मुड़ी डोलबैत)* हँ, से तँ हएत।

रागिनी- हम तोरा कहाँ कहै छिअ जे कमा कऽ सभटा हमरे दऽ दए, ओते खगतो ने अछि। तूँ नोकरी करै छह, सरकारक काज करै छहक, मुदा पुतोहु बाल-बच्चा। जँ एहेन पुतोहु भगवान देथि जिनकर हाथक भोजन पइठ नै हुअए तइसँ नीक जे नहियेँ देथि।

रविन्द्र- से की, से की माए?

रागिनी- किछु ने।

रविन्द्र- मोनमे एते दुख नै कर।

रागिनी- दुखो वएह नीक होइ छै जइसँ किछु भेटै छै। जइसँ किछु भेटल नै तइसँ नीक जे मोनमे दुख अबै ने दी। जहिए अपने

(पति) संग छोड़लनि तइ दिन मोनकेँ बुझा देलिऐ जे संग पुरैक हाथ जे पकड़ने छला तिनकासँ हाथ छुटि गेल।

अनुराधा- माए, अनेरे ई सोग अरजि-अरजि बोझ बना माथपर रखने छथि।

रागिनी- हमहीं किए रखब, सभ बाप-माए, दादा-दादी अपन अगिला परिवारक बोझ माथपर रखैए। दस बर्खक पोता अछि, जेकरा आइ देखलौं हेन। यएह मनोरथ भगवान देलनि।

अनुराधा- अपने नै जाइ छथि आकि हम सभ मनाही करै छियनि?

रागिनी- मनाही दू रंगक होइ छै, एकटा होइ छै जे मुँह फोड़ि कहब आ देसर होइ छै उनटा बात-विचार। पहुँनाइओ लाथे जे जाएब से ने काहे-कूहे बाजए अबैए आ ने एक्कोटा चिन्हार लोक भेटत।

अनुराधा- हम सभ जे छियनि?

रागिनी- कहलौं तँ बेस बात मुदा बेटा-पुतोहु आकि परिवारक आने, सभकेँ एक सीमा छै। सीमा भीतर गपे केते रहै छै। मुदा चौबीस घंटाक दिन-राति छोट तँ नै होइए।

अनुराधा- फेर लोकक आएब-जाएब रहै छै आकि नै?

रागिनी- की उत्तर देबह।

रविन्द्र- किए, किए माए चुप भेलँह?

रागिनी- चुप की हएब। तूँ सभ चुप केने छह। जइ घरमे जनम लेलह, खेललह-धुपलह, पढ़ि-लिख नोकरी पौलह, ओही घरकेँ बिसरि गेलह।

रविन्द्र- की करबै तेते काज बढ़ि गेल अछि जे नीनो हराम भऽ जाइए।

रागिनी- हम से कहाँ किछु कहै छिअ। मुदा कान खोलि दुनू बेकती सुनि लाए जे जहिना अपने (पति) अपन लगौल गाछीमे बास करै छथि तहिना हमहूँ बास करब। जहिना तूँ अपन मोनक मालिक छह तहिना हमहूँ छी।

रविन्द्र- आशा लगा आएल छेलौं।

रागिनी- तोहर आशा भग्न कहाँ होइ छह। अखने आँखि मूनब, सभटा तँ तोरे हेतह। हमरो तँ जिनगी अछि। जिनगी लेल तँ सभ कथुक बेगरता सभकेँ रहै छै।

रविन्द्र- आब केते दिन...?

रागिनी- जिनगीक कोनो ठेकान अछि, अखनो टन कहि देब आ पच्चीसो पचास बर्ख जीब सकै छी। तइले...?

(पीपरावाली माथपर छिट्टा लेने प्रवेश...)

पीपरावाली- दादी, भगवान हिनका भल करनु बड़बढ़ियाँ कमाइ भेल। दुनू भाए-बहिनकेँ आंगी-पेंट कीनि देलिऐ।

रागिनी- भगवान भल करथुन। मुदा उसरलमे एहल। आब कहाँ कोनो बरतन-बासन रहल। जेतबेक बेगरता होइए तेतबे अछि।

रविन्द्र- घरक सभ बरतन बेचि लेलैं माए?

रागिनी- मोनसँ नै हटै छेलए, मुदा दोसर उपाइए की?

रविन्द्र- आब केना चलतौ?

रागिनी- अखनि तक तँ बरतने-वासन सठल। अखनि गहना-जेबर तँ अछिए। जेकरा बेसी छै ओकरा लेल गहना श्रृंगारक बौस छिऐ आ जेकरा नै छै तेकरा लेल पेटेक आगि मिझबैक सम्पत्ति।

रविन्द्र- कोन वस्तु छेलै कनियाँ, जे बढ़ियाँ कमाइ भेल?

पीपरावाली- काका, हिनकासँ लाथ कोन। जहिना दादी तहिना ने ईहो छथि। तामक तमघैल छेलै।

अनुराधा- आब तँ तामक दाम बहुत बढ़ि गेल अछि।

रविन्द्र- कोन चीज सस्त रहल।

रागिनी- बौआ, से बात नै छै, महग बौस सस्ता भऽ गेल आ सस्ता वस्तु महग।

अनुराधा- से की?

रागिनी- की कहबह। जखनि मनुखे अपन मोल नै बुझैए तखनि चरचे की?

((समाप्त))

एकांकी

बिरांगना

पात्र परिचए :: बिरांगना

पुरुष पात्र-

१.	सोनमाकाका-	६५ बर्ख
२.	चेथरू-	४५ बर्ख
३.	जुगेसर-	५० बर्ख
४.	अयोधी-	३० बर्ख
५.	जीवन-	३५ बर्ख

स्त्री पात्र-

१.	रूपनी-	६० बर्ख
२.	कुशेसरी-	५० बर्ख
३.	कोशिला-	२२ बर्ख

पहिल दृश्य-

(अपन-अपन आँगनसँ निकलि रस्ताक भकमोड़ीपर ठाढ़ भऽ...)

सोनमाकाका- सुनै छी जे रमफलबा आएल हेन?

रूपनीदादी- सएह तँ सुनलौं मुदा तेहेन लोकक मुहेँ सुनलौं जे सुनिओ कऽ अनबिसवासे अछि। तँए दोसर गोटेसँ भाँज लगबए विदा भेलौं।

चेथरू- नै-नै बात ठीके छिऐ।

सोनमाकाका- से तूँ केना बुझै छहक?

चेथरू- ओहन लोकक मुहेँ सुनलौं जेकरा मुहसँ असत् बात निकलिते ने छै।

सोनमाकाका- जेकरा मुहेँ ओ सुनने हएत वएह जँ असत् कहने होइ, तखनि?

रूपनीदादी- से तँ भऽ सकै छै। मुदा तहूमे भाँज छै।

सोनमाकाका- से की भाँज छै?

चेथरू- से अहाँ नै बुझै छिऐ काका, जे देखलाहा बजैए ओ सत होइ छै आ जे सुनलाहा रहै छै ओइमे दुनू होइ छै।

सोनमाकाका- हँ से भऽ सकैए। केहेन लोकक मुहेँ सुनने छेलह?

चेथरू- दूधवाली मुहेँ सुनने छेलौं। वएह जे दूध बेचि कऽ ओइ टोलसँ आएल छेलै, बाजलि रहए।

सोनमाकाका- उ तँ दूध बेचैमे लगल हएत आकि बात बुझै पाछू।

चेथरू- ओकरा अहाँ नीक जकाँ नै चिन्है छिऐ। कोनो की माछ-कौछ बेचैवाली छी जे पएरक औंठासँ पलड़ा दाबि उठा देबै आ घट्टी जोखि देबै।

सोनमाकाका- दूधो बेचैवाली तँ पोखरिक पानिए मिला दइ छै, से।

चेथरू- हँ, से तँ होइ छै। मुदा ओकर कारोबार रहै छै कएक दिन। बाढ़िक पानि जकाँ आएल आ पड़ाएल।

रूपनीदादी- हँ, से तँ देखै छिऐ जे जहियासँ काज धेलक तहियासँ ने ओकर दूधनप्पा फुच्ची फुटल आ ने नाप-जोखक बदनामी कहियो लगलै।

चेथरू- *(अपन पक्ष मजबूत होइत देखि, मुसकिया..)* दादी, बुढ़िया देखैमे ने एक चेराक बूझि पड़ैए मुदा गामेक नै, घर-घरक रत्ती-बत्ती बात बुझैए।

सोनमाकाका- की सभ कहलकह?

चेथरू- बाजलि जे दिल्लीसँ मालिक अपना गाड़ीपर लादि कऽ पहुँचा गेल हेन।

सोनमाकाका- एतबे कहलकह आकि आगूओ किछु बजलह?

चेथरू- एतबे बजैमे तँ ओ अपन डाबासँ दूध नापि लोटामे दऽ देलक आ उठि कऽ विदा भेल।

सोनमाकाका- एहेन-एहेन बात तँ सरिया कऽ ने बूझि लेबाक चाही।

चेथरू- जाइत काल एते बात भनभनाइत सुनलिऐ जे एकटा टाँग काटि कऽ पठा देलकै आ पान साउ रूपैआसँ नोइस हेतै?

सोनमाकाका- एते पैघ बात आ कनीओ अँटका कऽ नै पूछि लेलहक?

चेथरू- काका, ओइ बुढ़ियाकेँ की बुझै छिऐ, कोनो की हमरे ऐठामटा अबैए जे निचेनसँ गप-सप्प करब।

सोनमाकाका- तखनि?

चेथरू- ओ बुढ़िया फुच्चीए-फुच्ची दूधेटा लोककेँ दइ छै आकि मिसरीओ घोड़ै छै।

सोनमाकाका- से की?

चेथरू- हम की ओते बुझै छी जे तेना भऽ कऽ बुढ़ियाक सभ बात बूझि लेबै, तखनि तँ जेते काज रहैए ओते तँ भइए जाइए। दादी लगमे सभ दिन बैसैत देखै छिऐ।

रूपनीदादी- हँ, से तँ बैसबो करैए आ गामक तीत-मीठ गपो कहैए। मुदा घुरैकाल बैसैए, तँए अखनि भेँट नै केलक हेन।

सोनमाकाका- ऐ ततमतीसँ नीक जे ओकरा घरेपर पहुँच मुहाँ-मुहीं गप कऽ ली।

चेथरू- काका, तइले तीनू गोरे किए जाएब। असगरे जाइ छी, सभ बात बूझि कऽ सुनाइओ देब?

रूपनीदादी- सभ दिन तोँ चेथरू-के-चेथरूऐ रहि गेलैं। पोता-पोती भेलौ से होश नै छौ।

चेथरू- दादी, एक ढाकीक के कहए जे सतरह ढाकी पोता-पोती भऽ जाएत तैयो अहाँ लगमे चेथरूए रहब। कोनो बात-विचारक जे जरूरति हएत तँ अहाँसँ नै पुछब, सोनमाकाकासँ नै पुछबनि तँ की बगूरक गाछ आ पसीज गाछसँ पुछबै?

रूपनीदादी- देखहक चेथरू, हम अपना नजरिए देखबो करब आ पुछबो करबै, तहिना तोहूँ सोनाइ भेलह किने?

चेथरू- तइ नजरिए कहाँ कहलौं। तीनू गोटे जे एक्केटा काजमे बड़दैतौं, तइ दुआरे कहलौं।

रूपनीदादी- से बड़ बेस। मुदा काजक आँट-पेट नै बुझै छहक। कहैले सभ काजे छी, मुदा ओहूमे छोट-पैघ, नीक-अधला होइ छै।

चेथरू- कनी परिछा कऽ कहियौ?

सोनमाकाका- ठीके चेथरू, तूँ कहियो पुरुख नै हेबह?

चेथरू- काका, अहाँ सने जे कोनो पुरुखपना काज करबै तइसँ पुरुख नै हेबै।

सोनमाकाका- पुरुखक संगी हेबहक। पुरुख तखनि हेबह जखनि अपने ठाढ़ भऽ आगूक डेग बढ़ेबह। अखनि दोसर-तेसर बात छोड़ह आ रमरूपाक भाँज नीक-नहाँति लगावह।

चेथरू- जखनि अहाँ सबहक विचार अछि तखनि तीनू गोरे चलू।
(तहीकाल आगूसँ जुगेसर अबैत..)

सोनमाकाका- जुगे, केम्हर-केम्हरसँ एलह?

जुगेसर- काका, की कहब *(गुम्म होइत...)*

चेथरू- मुँहक बात दबलह किए? किछु भेलौं तँ हम सभ समाज भेलौं। न्यायालय भेलौं। अगर हमरा समाजक अंगक संग कोनो अन्याय दोसर समाज करत तँ ओ बरदाससँ बाहर अछि। की सोनमाकाका..?

सोनमाकाका- चेथरू, जे बात तूँ बजलह वएह गामक प्रतिष्ठा छी। मुदा, पाकल आम भेलिअ, सभ दारो-मदार तँ तोरे सभपर छह।

चेथरू- जुगे भाय, अहाँ तँ आँखिक देखल बाजब। रामरूपक की...?

जुगेसर- देखैबला दृश्य नइए। अपने रामरूप ओछाइनपर ओंघराएल अछि आ घरवाली ओछाइनिक निच्चाँमे ओंघरनिया दऽ रहल अछि। तीन सालक बच्चा झाँपल कपड़ा हटा-हटा पएर तकैए।

रूपनीदादी- बाप रे बाप! समाजक एकटा घर उजड़ि गेल।

जुगेसर- दादी, अहाँ नै जाउ। सोनमाकाका अहूँ नै जाउ।

सोनमाकाका- किए?

जुगेसर- ओहन दृश्य देखैक करेज आब नै रहल। हो-न-हो पहिलुके नजरिमे ने अपने...?

चेथरू- दादी, कहने तँ पहिने छेलौं, मुदा हमरा गपक मोजरे ने देलौं। आब कहू जे कोनो अनरगल कहने रही?

सोनमाकाका- हँ, से तँ बात मिलिए गेलह। मुदा एते बात बूझि कऽ तँ नै बाजल छलह? अच्छा, एतै बैस कऽ सभ बात कहऽ।

जुगेसर- ओतए तँ लोकक करमान लगल छै। तहूमे धिया-पुता आ झोटहा भरि देने अछि। चुट्टी ससरैक जगह नै छै।

सोनमाकाका- गप किछु कहऽ ने?

जुगेसर- कोनो बात की सोझ डारिए चलए दइए। एक तँ कार कौआक जेर जकाँ धिया-पुता काँइ-काँइ करैए तैपरसँ जनीजाति भिन्ने छाती पीटैए।

चेथरू- तैयो तँ भाँजपर किछु गप चढ़ले हेतह?

जुगेसर- हँ, एते उड़नतीए सुनलौं जे डरेवर जाइ काल बाजल जे कारखाना मालिक इलाजमे तीन लाख रूपैआ खर्च केलखिन। पाँच सए खाइ-पीऐले, आ लत्ता-कपड़ा सेहो देलखिन।

रूपनीदादी- पान सए रूपैआ केते दिन चलतै। तहूमे सभटा लोथे भेल। जहिना रामरूप तहिना बच्चाक संग बच्चाक माएओ। केना वेचारी दुनूकेँ छोड़ि बोइन करए जाएत।

चेथरू- से तँ ठीके। मुदा दादी झोंटहा सबहक बिसवास कोन। बेटाकेँ जहर-माहूर खुआ देत आ घरबलाकेँ छोड़ि पड़ा दोसर घर चलि जाएत।

रूपनीदादी- सेहो होइए चेथरू। तोरो बात कटैबला नहियेँ छह मुदा एक्के दाबिए केना खिचड़िओ रान्हवह आ खीरो। एकटामे नून पड़त एकटामे चिन्नी।

चेथरू- से तँ ठीके कहै छिऐ दादी। अहिना ने भालेसरोकेँ भेल। ओहो जे जमक गाछपर सँ खसि जाँघ तोड़लक आ डाक्टरो बुट्टी भिड़ा कऽ काटि देलकै। फेर ओ वेचारी (भालेसरक पत्नी) केना छह मसुआ बेटीक संग रहि ता जिनगी घरबलाक सेवा केलक।

सोनमाकाका- सोझहे सभ गप खिस्सा जकाँ सुनने नै हेतह चेथरू। ओना जुगेसर ठीके कहलकह। अखनि छोड़ि दहक। बेरू पहरमे चलब।

रूपनीदादी- हँ, हँ, एहेन-एहेन जगहपर नै गेने समाजक रसे की रहत। समाज तँ तखने ने समाज जखनि सबहक सुख-दुख सेगे पोखरिमे नहाइ।

चेथरू- कनीए-कनीए जे सोचै छी दादी तँ बूझि पड़ैए जे समाजपर एकटा भार पड़ि गेल।

❍ ❍

दोसर दृश्य-

(अयोधीक दरबज्जा। दरबज्जाक ओछाइनिक एक कोनपर अयोधी बैसल दोसर कोनपर अयोधीक माए कुशेसरी बैसल..)

अयोधी- माए, आब की करब?

कुशेसरी- बौआ, आब छाती बदलि गेल। (आँखि मीड़ैत) धरमागती बात तोरा कहै छिअह।

अयोधी- अखनि जे तत्-खनात बेगरता आबि गेल पहिने से विचार दे। तखनि दोसर-तेसर सोखर सुनबिहैँ।

कुशेसरी- बौआ, सएह कहै छिअह। लोकेक बेगरता लोककेँ होइ छै। मुदा...?

अयोधी- चुप किए भेलैँ?

कुशेसरी- लोकक बोन अफ्रिकनो बोनसँ घनगर अछि। तूँ ई नै बुझिहअ जे माए हमरा भाएकेँ खून दइसँ रोकत। मुदा तइसँ पहिने जँ बुझैक जरूरति छह से कहए चाहै छिअह।

अयोधी- माए, जाबे पेटक बात निकालि नै फेकब, ताबे गौस्टिकक रोगी जकाँ छुटैए। जइसँ कोनो बात सुनैक मने ने होइए।

कुशेसरी- बाजह, पहिने तूँ अपने कोठी खलिया कऽ झाड़ि लैह तखनि जे आनो अन्न ओइमे देबहक तँ तैयो एकछहे रहत।

अयोधी- खनदान दिस तकै छी तँ सुमारक लगैए। जहिना परबाबा आन गामसँ आबि बसला तहिना एकघराक घर अखनो छीहे।

कुशेसरी- जहियासँ ऐ गाममे पएर रखलौं तहियासँ तँ गामो आ परिवारोकेँ देखिते-सुनिते एलौं। मुदा तइसँ पहिलुका बात तँ बुझल नइए। बाजह?

अयोधी- परबाबा मात्रिकमे आबि कऽ बसल रहथि। मात्रिकक डीह नीक डीह बुझलनि। गामक भागीन, तँए गामक बाट चिक्कन। केतौ खाधि पीछड़ नै।

कुशेसरी- आगूक पिढ़ी केना बढ़ल?

अयोधी- हुनका (परबाबाकेँ) दूटा बेटा आ दूटा बेटी भेलनि। परिवार गेना फूलक गाछ जकाँ झमटगर हुअ लगल। दुनू बेटी सासुर गेलनि। परिवारो नीक तँए समरस परिवार भेने समरस जीवन समरस सुख पाबि मुइला।

कुशेसरी- दुनू भाँइक परिवार?

अयोधी- दुनू भाँइओ आ माएओक एहेन सोभाब रहनि जे कहियो कोनो बाते झगड़ा नै भेलनि। जेठका भायक बिआह धुमधामसँ भेलनि।

मुदा छोटका तेहेन भाएओ, भौजाइओ आ माएओक सहलोल भऽ गेलखिन जे बिआहे ने केलखिन।

कुशेसरी- परिवारक बात दुनू गोरे नै बुझौलखिन?

अयोधी- कहाँदन रहबो करथिन मतिछिन्नु जकाँ। कहियो झोंक चढ़ि जानि तँ भरि-भरि दिन, बिनु खेनौं-पिनौं कोदारिए भाँजैत रहि जाइ छेलखिन।

कुशेसरी- *(ठहाका मारि..)* मनुखदेवा ने तँ रहथिन?

अयोधी- एँह, ओतबे, कहियो झोंक चढ़नि तँ खाइओ बेरमे पिढ़ियापर बैस रूसि रहथि।

कुशेसरी- से किए?

अयोधी- *(हँसैत..)* ताबे तक रूसल रहथि जाबे तक माए आगूमे नै आबि जानि। भाय-भौजाइक बातक कोनो मोजर नै।

कुशेसरी- माइयक बात मानि लेथिन?

अयोधी- माए आबि जखनि पुछथिन तँ कहनि जे बेटा बिनु माइयक सेवा केने खाइए ओ पापी छी। तँए पहिने एक हाथ सेवा तोरा कऽ देबौ तखनि मुँहमे अन्न-पानि लेब। एकभग्गु लोक जकाँ?

कुशेसरी- एकभग्गु लोक जकाँ नै, एकबड्डू लोक जकाँ।

अयोधी- हँ, हँ, तहिना।

कुशेसरी- पछिला पिढ़ीसँ तँ छीहे। बौआ छातीपर हाथ रखि कहै छिअह। ऐ घरमे भिनौज हमरे करौल छी। जे ओइ दिनमे नै बुझै छेलिऐ।

अयोधी- से आब केना बुझै छिही?

कुशेसरी- हम दुनू परानी टटके जुआएल रही आ भैया दुनू परानी ठमकि गेल रहथि। मलिकाइन बनबाक इच्छा केकरा नै लगै छै। हमरो लगल आ भिनौज करेलौं।

अयोधी मोन हल्लुक भेल। आब विचार दैह जे रामरूपकेँ देहमे खून कम छै, ओ तँ हमरे खूनटा मिलै छै।

कुशेसरी- जेतेक खगता छै तइसँ दोबर दहक। आ ईहो बूझि लैह जे एकटंगा भाइक भार अपने कपारपर अछि।

(तहीकाल सोनमाकाका, रूपनीदादी आ चेथरूक प्रवेश.. । अयोधी सोनमाकाका आ चेथरूकेँ गोड़ लगलक। कुशेसरी रूपनीदादीकेँ गोड़ लागि विछानपर बैसा दुनू हाथे घुट्ठी दाबए लगलनि। जहिना धौना खसल सोनमाकाकाक तहिना रूपनीओ दादीक आ चेथरूओक। सभ गुम-सुम भेल बैसल..)

चेथरू- अयोधी, भगवान तोरा ऊपर ठनका खसेलखुन। मुदा...?

(सोनमाकाका आँखि उठा कखनो अयोधीपर तँ कखनो कुशेसरीपर तँ कखनो निच्चाँ कऽ तरे-तर रामरूपक कटल टाँगपर आ कखनो रामरूपक स्त्रीपर दौगबैत...)

रूपनीदादी- छोड़ह ऐ जाँतब-पीचबकेँ। पहिने रामरूपकेँ देखा दए।

(रूपनीदादीकेँ बाँहि पकड़ि कुशेसरी आँगन लऽ गेलि..)

सोनमाकाका- रामरूप तँ पितिऔत भाए छिअह किने?

अयोधी- हँ।

सोनमाकाका- ओकरा परिवारमे के सभ छै?

अयोधी- अपने दुनू प्राणी अछि आ एकटा तीन सालक बेटा छै।

सोनमाकाका- खेती-पथारी?

अयोधी- किछु ने। जँ से रहितै तँ अहिना परदेशसँ टाँग कटा घर अबैत।

चेथरू- एना भेलै केना?

अयोधी- सबटा अपन कपारक दोख होइ छै। कोनो की इहएटा ओइ करखन्नामे काज करै छेलै आकि आउरो गोरे।

चेथरू- काज कोन करै छेलै?

अयोधी- कहाँ दन, लोहा करखन्नामे काजे करैत काल एकटा गोलका गुरकि आबि कऽ जाँघेपर खसलै।

(तहीबीच रूपनीदादी कुशेसरीक संग अबैत..)

कुशेसरी- *(अबिते..)* अहूँ दुनू गोरे अँगने चलि कऽ कनी देखि ने लियौ?

चेथरू- दादी तँ देखि कऽ एबे केली हेन, पहिने हिनकेसँ बूझि ली।

रूपनीदादी- *(छाती पीटैत..)* एहेन अतहतह नै देखिने छेलौं। बाप रे बाप! मनुखक नक्शे बदलि गेल अछि। हे भगवान, जखनि विपतिए देलहक तँ आरो किए ने बेसी कऽ देलहक जे दू-चारि मासमे लोक बिसरि जाइत।

सोनमाकाका- ओना अपना चसमसँ देखब नीके होइ छै। मुदा किछु एहनो होइ छै जेकरा नहियेँ देखब नीक।

रूपनीदादी- पुरुखक जाइ जोकर आँगन नहियेँ अछि। वेचारी रामरूपक पत्नीकेँ ने नुआ-वस्त्रक ठेकान छै आ ने...।

चेथरू- तहूँमे अपना सभ की कोनो ओझा-गुनी, डाक्टर छी जे लगसँ देखबे जरूरी अछि। अपनो सभ वएह देखब जे दादी कहती।

सोनमाकाका- घओपर नून छीटि विसतार करबसँ नीक नहियेँ देखब।

चेथरू- काका...?

सोनमाकाका- अखनि किछु बाजैक समए नै अछि। फेर आएब तखनि किछु आगूक बात विचारब।

चेथरू- काका एक तँ वेचाराकँ अपना किछु ने छै तैपर अपने कोनो काजक नै रहल। जिवित शरीर तँ अन्न-पानि मंगबै करत। बिनु किछु केने धेने केतेक दिन चलत।

सोनमाकाका- यएह सभ ने बुझै-विचारैक अछि। तूँ दुनू गोरे अयोधी एक्के गाछक बखलोइया छह। जही गाछक बखलोइया रहै छै ओही गाछमे ने सटबो करै छै।

चेथरू- अयोधी, तेहेन दोरस हवा बहि गेल अछि जे चिनो-पहचिन भोतिया गेल अछि। जेना गाछमे देखैत हेबहक जे जे पात सुनटा गरे गाछक शोभा बढ़बैए वएह हवामे उनटि अपन असल रूप उनटा लइए।

अयोधी- भाय साहैब, अपना तँ ओते ऊहि नै अछि जे नीक अधला बात नीक जकाँ बुझबै मुदा एते अहाँ सबहक बीच बजै छी, जे देहक खुने नै ऐ देहसँ जेते भऽ सकतै तइमे पाछू नै हटब।

सोनमाकाका- बौआ, अखनि घरसँ बाहर धरिक सभ सोगाएल छी तँए, नीक जकाँ जिनगीकँ नै बूझि सकब। ताबे अखनि जे जे जरूरी काज सभ अबैत जाइ छह तेकरा सम्हारैत चलह। पाँच-दस दिन पछाति निचेनसँ विचारि लेब।

रूपनीदादी- बौआ, समाजमे एक-सँ-एक अमीर आ एक-सँ-एक गरीब रहैए। मुदा समाजरूपी नाहपर केना जिनगीक समुद्र पार करैए।

चेथरू- दादी, जहिना समाजमे एक-दोसरक देखा-देखी आन्हरो-बहिर हँसैत-खेलैत जिनगी गुजारि लइए तहिना भगवान रामरूपोक परिवारकँ पार लगौथिन।

❍ ❍

तेसर दृश्य-

(ओसारपर कोशिला (रामरूपक पत्नी) बैसल, आँखिसँ नोरक टघार चलैत। आगूमे तीन बर्खक बेटा ठाढ़ भऽ हाथसँ नोर पोछैत..)

कुशेसरी- कनियाँ, कनैत-कनैत मरिओ जेबह तैयो दुख मेटेतह। जखनि काँच बरतन ठाढ़ छी, हवा-विहाड़ि, पानि-पत्थर, सदासँ लगैत आएल आ आगूओ लगिते रहत। मुदा नान्हिटा बगरा-मेना कहाँ मेटा गेल। हम सभ तँ मनुख छी।

(आँखि उठा कोशिला कुशेसरीक निच्चाँसँ ऊपर निहारैत किछु बजैक विचार मोनमे उठैत, मुदा स्पष्ट बोली नै फुटैत..)

कोशिला- क-अ... क...इ...इ...।

कुशेसरी- तूँ ने अँगनामे बैस कऽ भरि दिन कनैत रहै छह मुदा हम तँ मौगी सबहक गप्पो सुनै छी किने।

कोशिला- के की बजैए?

कुशेसरी- जेकरा जे मोन फुड़ै छै से बाजैए। मुदा सुनबो करिहअ तँ उत्तर नै दिहक। सुनि कऽ कानेमे समेटि-समेटि रखैत जहिहऽ।

कोशिला- ई की सुनलखिन?

कुशेसरी- घरक लोक छिअ तँए तोरा कहबे करबह। परिवारक कोनो गप परिवारक लोकसँ छिपाबी नै। छिपाबी ओतबे जे जेकरा बुझैक जरूरति नै होइ।

कोशिला- *(आँचरसँ आँखि-मुँह पोछैत.. आ कनी सक्कत होइत...)* की..इ...इ सुनलखिन? कनी नीक जकाँ कहथु?

कुशेसरी- अगुता कऽ ने किछु सोचह आ ने किछु करह। भगवान समुद्र सन छाती देने छथि। गीधक सरापे जँ गाए मरैत तँ वएह उपटि गेल रहितै।

कोशिला- किछो तँ बाजथु?

कुशेसरी- कनियाँ, मौगी सभ कुट्टी-चौल करैए जे एहेन जुआन मौगी टंगकट्टा घर...।

कोशिला- काकी, गरीब छी एकर माने ई नै ने जे मनुखे नै छी।

कुशेसरी- रूपनीदादीकेँ बजबै ले अयोधीकेँ पठौने छिऐ। अबिते हेती। तखनि आउरो गप करब।

(रूपनीदादीक संग अयोधीक प्रवेश..)

(रूपनीदादीकेँ देखिते कोशिला दुनू हाथे दुनू पएर छानि..)

कोशिला- दादी, की ई सभ अपना नगरसँ बैलाइए देथिन?

रूपनीदादी- कनियाँ, पएर छोड़ू। *(कोशिला पएर छोड़ि दैत..)* कनियाँ कान खोलि सुनि लिअ। ने केकरो भगौने कियो नगरसँ भागि सकैए आ ने दिन-राति कनलासँ दुख मेटा सकैए।

कुशेसरी- एक लाखक गप कहलखिन दादी।

रूपनीदादी- गपक मोल लाख नै होइए। होइए ओइ काजक जइमे ओ गप सटल रहैए। छुछे कनलासँ जँ होइतै तँ घरसँ बाहर धरि कानि-कानि लोक देवी-देवता तककँ कहिते छन्हि। मुदा फल की होइ छै?

(दादीक आँखिपर कोशिला आँखि गड़ा..)

कोशिला- दादी, जे विधाता लिखलनि, ओ भोगब।

रूपनीदादी- कनियाँ, अहाँकँ तँ एकटा बेटो अछि, जे दस बर्खकबाद स्वामी तुल्य भऽ जाएत। तखनि तँ गनल कुट्टिया नापल झोर भेल। दस बर्खक दुख थोड़े बड़ भारी होइ छै। अही माटि-पानिक सीता रावणक लंकामे अहूसँ बेसी दिन रहल रहथि।

कोशिला- *(मुस्कीआइत..)* दादी, हिनका सभक नजरि चाही।

रूपनीदादी- कनियाँ, हम सभ ओहन धरतीपर जनम लेने छी जे सदिकाल शक्ति उगलैत रहैए। तोरा तँ बेटो छह जे ओ पूबरिया पोखरि देखै छहक?

कोशिला- कोन दऽ कहै छथिन दादी। पीपरक गाछ लगहक, आकि परती लगहक?

रूपनीदादी- पीपरक गाछ लगहक। ओ पोखरि प्रेमा दीदीक खुनौल छियनि। वेचारी बाल-विद्धव भऽ गेल छेली। गामक लोक केतबो हिलौलकनि-डोलौलकनि दोसर वियाह नै केलखिन।

कुशेसरी- सासुर नै बसलखिन?

रूपनीदादी- एक्को दिन सासुर नै गेल रहथिन। मुदा धैनवाद समाजकँ दी जे वेचारीक जिनगीक ठौर धड़ा देलकनि आ तोहूसँ बेसी ओइ वेचारीकँ धैनवाद दियनि जे अपन माए-बापक पार उतारैत, जिनगीक अंतिम समैमे पोखरि खुना समाजक सेवामे लगा कऽ मरली।

कुशेसरी- दादी, पहिलुका जुग-जमानाक परतर आब हेतै?

रूपनीदादी- किए ने हेतै।

(कहि चुप भऽ किछु सोचए लगैत...)

कोशिला- चुप किए भेलखिन दादी। आगूओक किछु कहथुन?

रूपनीदादी- *(गंभीर होइत..)* कनियाँ ने जुग-जमाना बदलल आ ने लोक बदलल।

कोशिला- तखनि?

रूपनी- बदलल लोकक विचार आ ओकर जिनगी।

कोशिला- केना?

रूपनी- सुनै छहक ने फल्लां गाम नीक आ फल्लाँ गाम अधला।

कोशिला- हँ, से तँ सुनबे नै करै छी बिसाएलो अछि।

रूपनीदादी- *(मुस्कीआइत..)* बिसाएलो छह! केना बिसाएल छह?

कोशिला- तीन बहिनमे छोट हम छी। जेठकी बहिनक बिआह छतनाराहीमे ठीक भेल। कहाँदन बड़ सुन्नर घर-बर रहै मुदा बिआह नै भेलनि?

रूपनीदादी- से किए?

कोशिला- घर-बर देखि बाबू-काका दुनू भाँइ बिआहक सभ बात-विचार पक्का कऽ लेलनि। पक्का भेलापर मामासँ विचार करए मात्रिक गेला।

रूपनीदादी- बात-विचार करैसँ पहिने ने राय-विचार कऽ लइतथि।

कोशिला- औगताइ भऽ गेलनि।

रूपनीदादी- की औगताइ?

कोशिला- दुनू भाँइ भोज खा कऽ घुमल रहथि, बरी-तरकारी किछु बेसी खेने रहथि। चालि पाबि पियास लगलनि। रस्ताकातमे इनार देखि ठाढ़ भेला। मुदा डोल नै रहने पानि केना पीबतथि।

रूपनीदादी- (मुस्की दैत..) तखनि की केलनि?

कोशिला- इनार लगसँ आगू बढ़ि एकटा दुआरपर जा जोरसँ हल्ला करैत डोल मंगलखिन। आँगनसँ एकटा अधवेसू डोल लेने बहराइत पुछलखिन।

रूपनीदादी- की पुछलखिन?

कोशिला- नाओं गाओं आ जाति।

रूपनीदादी- जाति मिलते ओ अधवेसू हँसैत बजला जखनि जाति-कुटुम छी तखनि ऐना अछोप जकाँ पानि पिआएब उचित हएत। पानि पीब बिआहक गप-सप्प पक्का भऽ गेल।

रूपनीदादी- हँ, तखनि तँ ठीके औगताइ भेल। मात्रिकक लोक की विचार देलकनि?

कोशिला- बेसी बात तँ नै बुझल अछि मुदा अधला गाम कहि मनाही केलकनि।

रूपनीदादी- कनियाँ एक्के गाम एक जातिक नीक होइए आ दोसराक अधला।

कोशिला- गाम तँ गामे होइए। फेर एना किए होइए।

रूपनीदादी- *(मुस्कीआइत, गंभीर होइत..)* कनियाँ, की कहबह आ केते कहबह। भगवान अखनि अपने फेरा लगा देलखुन। अपन दिन-दुनियाँक बात सोचह।

कुशेसरी- बेस कहलखिन दादी। ठनका ठनकै छै तँ लोक अपना मत्थापर हाथ दइए। मुदा तँए कि ठनका मानि जेतै आकि माथ परहक

हाथसँ रोका जेतै। लेकिन एकटा तँ होइए जे लोक अपन रच्छा अपना हाथे करए चाहैए।

रूपनीदादी- बेस कहलिऐ। एकटा बात तँ तरे पड़ि गेल।

कोशिला- से की?

रूपनीदादी- जुग-जमाना बदलैक बात उठल छेलै। ने दिन-राति बदललहँ आ ने माटि-पानि, पहाड़। बदललहँ लोकक आचार-विचार। एकटा बात तँ अपनो ठहकैए जे जेना पहिने समाजक धारणा छल तइमे बहुत बदलाव आएल हेन।

कुशेसरी- दादी, आब हमहूँ कम दिनक नै भेलौं। जहिया सासुर आएल रही तहिया जे लाज करैबला पुरुख छला, हुनकापर नजरि पड़िते जेना मुँह झपए लगै छेलौं तहिना हुनको सभक नजरि पड़िते या तँ निच्चाँ मुहेँ मुड़ी-गोंति लइ छला वा दोसर दिस तकए लगै छला।

रूपनीदादी- बेस कहलहक। हमहूँ बुढ़ भेलों, आँखिक इजोतो घटि गेल, तैयो देखै छी तँ लाज होइए। अनेरे भगवान कोन सनतापे देखैले जिया कऽ रखने छथि।

कुशेसरी- से की दादी एक्केटाकेँ कहबै। मर्द-औरत दुनूक चालि एकेरंग भऽ गेल अछि।

रूपनीदादी- खैर, जे अछि जेतए अछि से तेतए रहऽ। (कोशिला दिस देखि) कनियाँ, समाज बड़ पैघ दुनियाँ छी। जाबे मनुखकेँ प्राण रहत ताबे केतौ दुनियेँमे रहत। एहेन विपति भगवान तोरेटा नै देलखुन हेन, तोरा सन-सन बहुतो अछि।

कुशेसरी- दादी, सएह तँ दुनू माए-बेटा कहै छिऐ जे दुनू गोटेक जड़ि एक्के अछि। देखै छिऐ जे सत-सत पिढ़ीक परिवार सभ अछि। हमरा तँ दुइए पिढ़ीक भेल हेन। तँए की दुनू दू भऽ गेल।

❍ ❍

चारिम दृश्य-

(अयोधी, कुशेसरी आ कोशिला ओसारपर बैसल।)

अयोधी- माए, जानिए कऽ तँ हम सभ गरीब छी तँ दुख केकरा हेतै। तोहूमे जँ हिम्मत हारिए देब तँ एक्को क्षण जीब पाएब।

कुशेसरी- ई कोनो नव गप छी। कर्ता पुरुखक ई दुनियाँ छी। कर्ता पुरुख जेहेन रहत ओ अपना सन दुनियाँ बना, बास करत।

अयोधी- (कोशिलासँ) देखू कनियाँ, जहिना अपना मोनक मालिक कियो होइए। तहिना अहूँ छी। तँए अपन अगिला जिनगीक रस्ता अपने धडए पड़त।

कुशेसरी- बेस कहलहक बौआ। जेना लोक सभकेँ देखै छिऐ जे चरि-चरिटा धिया-पुता छोड़ि दोसर घर चलि जाइए। तहिना जँ तोहूँ भागए चाहबह तँ कियो पकड़ि कऽ केते दिन रखि सकतह। मुदा?

कोशिला- मुदा की?

कुशेसरी- यएह जे अपना सबहक बाप-दादाक कएल कीर्ति मेटा रहल अछि।

कोशिला- कनी बुझा कऽ कहथु?

कुशेसरी- सभकेँ नीक-अधला काज करबाक छुट अछि। जेकरा जे मोन फुड़ै छै से करैए। मुदा मनुख जानवर नै विवेकी जीव छी। तँए नीक-अधलाक विचार तँ करए पड़तै।

कोशिला- की नीक अधला?

कुशेसरी- जहिना अपन कर्तव्य पूरा केलापर मरद पुरुख बनैए तहिना स्त्रीगणो ने नारी। दुनूकेँ अपन-अपन काजक रस्ता छै। रस्ताक संग किछु संकल्प छै, जे जिनगीकेँ जिनगी बनबै छै।

कोशिला- नै बुझलियनि हिनकर बात?

कुशेसरी- देखहक, तोरा कियो खुटामे बान्हि कऽ नै रखि सकै छह मुदा अपन जिनगीक बान्हसँ बन्हि जरूर रहि सकै छह। ई तँ तोरे ने बुझए पड़तह जे हमरे दुआरे घरबला अपन टाँग गमा अधमरू भेल अछि। दुधमुहाँ बच्चा सेहो अछि, तैठीन कोन धरानी चलए पड़त।

(तही बीच जीवनक प्रवेश..)

अयोधी- (जीवनसँ) केतए रहै छी, किनकासँ काज अछि।

जीवन- ओना हमरो घर एही इलाका अछि मुदा रहै छी दिल्लीमे। हमरा कम्पनीमे रामरूप काज करै छला हुनके परिवारसँ किछु खास विचार करए आएल छी।

अयोधी- हुनकर भाए हमहीं छियनि। ओ तँ अपने ओछाइनपर पड़ल छथि, उठि-बैस नहियेँ होइ छन्हि। तखनि बाजू, केहेन विचार करबाक अछि।

जीवन- कारखानाक मालिक राय-विचार लेल पठौलनि अछि।

अयोधी- कम्पनीक पठौल आदमी छी?

जीवन- हँ।

अयोधी- जखनि देहमे शक्ति छेलैक, हाथ-पएर दुरूस छेलैक तखनि तँ ओभर टाइमक लोभ देखा-देखा दिन-राति काज करा बेकम्मा बना घर पठा देलक। आ...?

जीवन- कम्पनीक जे निअम छै ओहि हिसाबे ने काज हएत?

अयोधी- निअम बनबैकाल काजो केनिहार (श्रमिक) सँ राय-विचार केने छेलिऐ?

जीवन- देखू, जहिना रामरूप कम्पनीक स्टाफ छला तहिना हमहूँ छी, तँए ऐ प्रश्नक उत्तर नै दऽ पएब।

अयोधी- तखनि?

जीवन- जे सभ सुविधा भेटै छै से सभ सुविधा हिनको (रामरूप) भेटतनि।

अयोधी- की सभ भेटतनि?

जीवन- इलाज करा देलनि। तत्काल पान सौ रूपैआक संग घर पहुँचा देलकनि।

अयोधी- बस?

जीवन- नै। एतबे नै। जँ पत्नी काज करए चाहती तँ नौकरीओ देतनि आ रामरूपक नाओंसँ एक लाखक बीमा सेहो कऽ देतनि जे मुइला पछाति परिवारकेँ भेटतनि।

अयोधी- जीबैतमे की सभ भेटतनि?

जीवन- परिवारकेँ ओही दरमाहाक नोकरी आ रहैक डेरा।

अयोधी- हम सभ गामक समाजमे रहै छी, तँए आगू किछु करैसँ पहिने समाजसँ विचार लेब जरूरी अछि।

जीवन- बहुत बढ़ियाँ।

अयोधी- (माएसँ...) जाबे हम समाजक पाँच गोटेकेँ बजा अनै छी ताबे हिनका चाह जलखै करा दिहनु।

कुशेसरी- बड़ बढ़ियाँ।

(अयोधी जाइए। अयोधीकेँ परोछ होइते कोशिला अधझँप्पु मुँह सोलहन्नी उघारि...)

कोशिला- जहिना सोलह-सोहल, अठारह-अठारह घंटा पतिसँ काज लइ छेलौं तहिना ने हमरोसँ कराएब?

जीवन- (कनी गुम्म होइत..) की मतलब?

कोशिला- मतलब यएह जे जखनि सोलह-अठारह घंटा करखन्नामे काज करब, तखनि अपने कखन भानस-भात करब आ खा-पी अराम करब।

जीवन- एकरो जवाब नै देब।

कोशिला- (झपटैत..) एतबे नै, जखनि अपनो जोकर समए अपने नै भेटत, तखनि तीन बर्खक दूधमुहाँ बच्चा आ अपंग पतिक सेवा कखन करब।

जीवन- (प्रलोभन दैत..) अहाँकेँ थोड़े करखन्नामे काज करए पड़त?

कोशिला- तब?

जीवन- अहाँकेँ कोठीएक काज भेटत। जेहने काज हल्लुक तेहने समैओक। कोठीएमे रहैओक बेवस्था रहत आ अपूछ खेनाइओ-पिनाइ हएत।

कोशिला- (किछु सहमैत..) जँ हमरा इज्जतक संग खेलबाड़ हएत तखनि के बचौत?

जीवन- मालिकक नजरि सभपर रहै छन्हि। कि मजाल छी जे एकटा माछीओ-मच्छर, बिना हुनका पुछने कोठीक भीतर जा-आबि सकैए।

कोशिला- (आँखि टेढ़ करैत..) ई तँ बेस कहलौं जे बाहरसँ माछीओ-मच्छर नै जा सकैए मुदा जँ कोठीक भीतरेक लोक...?

जीवन- ओना अहाँक शंका, किछु अंशमे ठीके अछि मुदा घनेरो औरत, जुआनसँ अधबेसू धरि, कोठीक भीतर काज करैए।

कुशेसरी- बजलौं तँ बेस बात। मुदा जहिना, ने सभ पुरुखक चालि-ढालि बेवहार एक रंग होइ छै तहिना तँ स्त्रीगणोक अछि। एक्के काजकेँ कियो खेल बुझैए कियो इज्जत।

(सोनमाकाका, चेथरूक संग अयोधीक प्रवेश..)

कोशिला- भने कक्को आ भैयौ आबिए गेला।

अयोधी- काका, दिल्लीसँ जीवन आएल छथि।

सोनमाकाका- कनियाँ, की सभ जीवन कहै छथि?

कोशिला- कहै छथि जे अहाँकेँ नोकरी भेटत।

सोनमाकाका- अपन की विचार होइए। अपन जे विचार हएत सहए ने करब।

कोशिला- काका, हिनका सभकेँ किए बजौलियनि। जँ अपना विचारे करबाक रहैत तँ कऽ नेने रहितौं किने।

चेथरू- कनियाँ, अपन की विचार अछि, से तँ अपने ने बाजब।

कोशिला- भैया, ई सभ जे विचार देता सएह ने करब।

चेथरू- (जीवनसँ) जँ कनियाँ (कोशिला) नोकरी नै करै चाहथि तखनि की सभ देबनि?

जीवन- अपना रहने जे सभ सुविधा भेटतनि ओ नै रहने थोड़े भेट पौतनि।

चेथरू- से की?

जीवन- तेते पैघ कारोबार अछि जे के केकरा देखत। सभकेँ अपने काज तेते छै जे केकरो दिस केकरो तकबाक पलखति छै।

चेथरू- गाममे रहनिहारि मुँह दुब्बरि औरतकेँ करखन्नाबला सभ मनुखो बुझैए।

सोनमाकाका- चेथरू बातकेँ अनेरे केते चेथाड़ै छह। छोड़ह ऐ सभकेँ। बाजू कनियाँ अहाँक की विचार अछि?

कोशिला- काका, सुनलाहा नै घरेबलाकेँ देखै छियनि जे परिभुत्ता छेलनि ताबे गाए-महिंस जकाँ लाठी देखा-देखा दुहैत रहलनि आ जखनि पैरभुत्ता घटलनि तखनि असमसानक मुरदा जकाँ उठा कऽ ऐठाम दऽ गेलनि। तहिना जँ...?

सोनमाकाका- नीक जकाँ सोचि-विचारि लिअ। गामक समाज मनुखकेँ छाती चढ़ा बसबैए, जे शहर-बजारमे थोड़े अछि।

कोशिला- हँ, ई तँ बेस कहलथि काका।

सोनमाकाका- एतबे नै कनियाँ, आँखि उठा कऽ देखियौ, निसभेर रातिमे जँ केतौ चोर-चहार अबै छै आकि राजा-दैव होइ छै तँ जे जतए सुनैए ओ ओतैसँ हल्ला करैत दौगैए। मुदा...।

कोशिला- मुदा की?

सोनमाकाका- की कहबह आ केते कहबह। मुदा बिना कहनौं तँ नहियेँ बुझबहक। शहर-बजारमे देखबहक जे ऊपरमे ठनका खसल अछि आ दोसर मुँह घुमा कऽ जा रहल अछि।

चेथरू- (बिच्चेमे..) काका, एना किए कहै छिऐ, एना ने कहियौ जे बच्चामे एक्के गाछ एकटा विशाल वृक्ष बनि जाइए आ दोसर लत्ती बनि ओहन भऽ जाइए जे अपने एक्को-हाथ ठाढ़ होइक तागति नै रहै छै, मुदा माटिक सिनेह ओहन होइ छै जे वएह वृक्ष बाँहि पसारि ओइ लत्तीकेँ अपना ऊपर फुनगी धरि बढ़ैक रस्ता दइए।

सोनमाकाका- बेस कहलहक चेथरू। एकबेर तोहूँ अयोधी बाजह। कनियाँ अखनि पीड़िताएल छथि तँ...।

अयोधी- काका, जहिना सभ दिन गामक खुट्टा मानैत एलौं तहिना अखनो मानै छी। हम सभ तँ गरीब छी समाजेक आशपर जीबै छी। ई कखनो नै मोनमे अबैए जे बेर-विपति पड़त तँ समाज छोड़ि देत। तँए जे विचार देब तइमे एक्को-डेग पाछू नै खिंचब।

कोशिला- (उफनैत..) भैया, काका, बाबा समाजक सभ कियो। जाबे धरि कोशिलाक देहमे पैरभुत्ता रहतै ताबे धरि कहियो पएर पाछू नै

करत। जइ दिन पैरभुत्ता टुटतै तइ दिन समाजेमे भीख मांगब। भलहिं कियो भिक्षु किए ने कहए।

((समाप्त))